राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

शनि देव को इस आसान उपाय से करें प्रसन्न, साढ़े ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

मंगलवार, 02 मई 2023 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 10 अंकः 131 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

भाजपा सरकार ने चार प्रतिशत मुस्लिम कोटा खत्म कर दिया: शाह

गुब्बी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को यहां एक विशाल रोड शो किया, जिस दौरान उन्होंने लोगों से 10 मई को होने जा रहे कर्नाटक विधानसभा चुनाव के लिए समर्थन मांगा। शाह विशेष रूप से 'डिजाइन' किये गये एक वाहन पर खड़े थे और उनके साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तुमकुर से सांसद जी एस बसवराज तथा पार्टी के अन्य नेता भी थे। मार्ग के दोनों ओर और आस–पास की इमारतों पर मौजूद लोगों ने शाह का अभिवादन किया। रोड शो के दौरान शाह के वाहन के साथ–साथ काफी संख्या में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता चल रहे थे, जो पार्टी का झंडा लिये हुए थे और भाजपा तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समर्थन में नारे लगा रहे थे। यहां तुमकुर जिले में रोड शो के समापन पर गृह मंत्री ने लोगों से भाजपा उम्मीदवार को वोट देने की अपील की और यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि मोदी के नेतृत्व में राज्य में 'डबल इंजन की सरकार' सत्ता में आए। शाह ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री बी एस येदियुरप्पा और मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कर्नाटक के लिए काफी काम किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने मुस्लिमों को मिलने वाला चार प्रतिशत आरक्षण खत्म कर दिया और वोक्कालिगा, लिंगायत तथा अनुसूचित जातिध्अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए 'कोटा' बढ़ा दिया। उन्होंने कहा, ''यदि कांग्रेस सत्ता में आएगी, तो वह (बढ़ाये गये) इन सभी आरक्षण को वापस ले लेगी और एक बार फिर से मुस्लिम आरक्षण ले आएगी। क्या आप चार प्रतिशत मुस्लिम आरक्षण चाहते हैं?'' उन्होंने कहा, ''यदि आप कर्नाटक में डबल इंजन की सरकार लाते हैं, तो मोदी जी एक बार फिर 2024 में प्रधानमंत्री बनेंगे।

केंद्र सरकार का बड़ा फैसला, आतंक फैलाने वाली 14 पाकिस्तानी ऐप को किया बैन

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने पाकिस्तान की कई ऐप्स के विरुद्ध बड़ा कदम उठाया है। केंद्र सरकार ने आईबी के द्वारा मिले इनपुट के बाद पाकिस्तान से संचालित होने वाली 14 मैसेजिंग ऐप्स को बैन कर लिया है। इन ऐप्स का उपयोग जम्मू कश्मीर में बड़े पैमाने पर आतंक फैलाने के लिए किया जाता था। इसे लेकर खुफिया एजेंसियों ने आईबी को जानकारी दी थी।

सूत्रों के अनुसार इन मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग कश्मीर में आतंकवाद को फैलाने के लिए किया जाता था। इन ऐप्स का उपयोग आतंकवादी अपने समर्थकों और अंडरग्राउंड वर्कर्स के साथ संवाद करने के लिए करते थे। इसका मुख्य उद्देश्य आंतकवाद फैलाना ही था, जिस कारण सरकार ने इन ऐप्स के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है। जानकारी के मुताबिक सुरक्षा एजेंसियां आतंकवादियों द्वारा आपस में संवाद करने के लिए उपयोग होने वाले चौनलों पर कड़ी नजर रखती है। इन्हें संचार माध्यमों को ट्रैक किया जाता है। एजेंसियों के मुताबिक मोबाइल एप्लिकेशन के प्रतिनिधि भारत में नहीं है ऐसे में इन्हें ट्रैक करना काफी मुश्किल हो जाता है मगर कड़ी मेहनत के बाद इन एप्स के बारे में जानकारी जुटाई गई। फिर ऐसी ऐप्स की सूची बनाई गई जिन्हें प्रतिबंध करना था क्योंकि वो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती है और भारतीय कानून का पालन नहीं करती है। जानकारी के अनुसार आतंकी इन मोबाइल मैसेंजर ऐप का उपयोग संदेश फैलान के लिए और पाकिस्तान से संदेश हासिल करने के लिए किया करते थे। इन ऐप्स को सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 69ए के तहत ब्लॉक किया गया है। बता दें कि ये कोई पहला मौका नहीं है जब भारत सरकार ने देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ऐसा बड़ा फैसला किया है। देश की सुरक्षा को खतरा पैदा करने वाले ऐप्स के खिलाफ पहले ही केंद्र सरकार कार्रवाई कर चुकी है। इससे पहले सरकार ने कई बार चीनी मोबाइल ऐप्स को बैन किया है। बीते कई वर्षों के दौरान भारत सरकार ने देश की संप्रभुता और अखंडता, भारत की रक्षा, राज्य की सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखने के उद्देश्य से चीन की लगभग 250 ऐप्स के खिलाफ ऐसी ही सख्त कार्रवाई करते हुए उन पर प्रतिबंध लगाया था।

इन ऐप्स पर लगा बैन

जानकारी के मुताबिक केंद्र सरकार ने इनपुट मिलने के बाद कुल 14 ऐप्स के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है। केंद्र ने जिन ऐप्स पर बैन लगाया है उनमें क्रीपवाइजर, एनिग्मा, सेफस्विस, विकरमे, मीडियाफायर, ब्रियर, बीचौट, नंदबॉक्स, कॉनियन, आईएमओ, एलिमेंट, सेकेंड लाइन, जांगी और थ्रेमा शामिल हैं।

कर्नाटक के लिए बीजेपी ने जारी किया घोषणा पत्र, जनता के लिए की है ये घोषणाएं, जानें यहां

बंगलुरु। चुनावी राज्य कर्नाटक में सत्तारूढ़ दल बीजेपी ने अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इस घोषणा पत्र में बीजेपी ने जनता की सुविधा के लिए कई तरह की घोषणाएं की है। बीजेपी ने इस घोषणा पत्र को प्रजा ध्वनि नाम दिया है, जिसमें यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू करने की घोषणा भी की है। कर्नाटक में 10 मई को मतदान होना है जिसके बाद 13 मई को नतीजे आएंगे। इस घोषणा पत्र को पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा, सीएम बोम्मई और पूर्व सीएम बीएस येदियुरप्पा ने जारी किया है। संकल्प पत्र जारी करने के मौके पर जेपी नड्डा कहा कि हम पहले की तरह ही एक बार फिर किए हुए वादों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पार्टी की घोषणा के मुताबिक गरीब लोगों को राज्य में 10 लाख घर उपलब्ध कराए जाएंगे। सामाजिक न्याय निधि स्कीम के तहत एससी–एसटी महिलाओं के लिए पांच वर्षों तक 10 हजार रुपये की एफडी करवाई जाएगी। पार्टी ने यूनिफॉर्म सिविल कोड को खासतौर से ध्यान में रखा है। पार्टी का घोषणा पत्र जारी करते हुए मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा कि राज्य के विकास में मेनिफेस्टो को ध्यान में रखना जरुरी है। हमारा विश्वास मजबूत राज्य में है। मजबूत केंद्र ही मजबूत राज्य की नींव है। आज जो घोषणा पत्र जारी हुआ है वो जनता का है, जिसे सुधाकर एंड टीम ने तैयार किया है। घोषणा पत्र बनाने के लिए जनता और विशेषज्ञों से राय ली गई है।

ये हैं संकल्प पत्र की प्रमुख बातें

– कर्नाटक में बीजेपी की सरकार बनने पर यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू होगा
– प्रदेश के हर वार्ड में अटल आहार केंद्र स्थापित किया जाएगा
– बीपीएल परिवारों को तीन सिलेंडर निशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे
– बीपीएल परिवारों को सरकार आधा लीटर नंदिनी दूध मुफ्त में मुहैया कराएगी
– किसानों को बीज के लिए दस हजार रुपये दिए जाएंगे
– गरीब परिवारों को पांच किलो चावल और 5 किलो मोटा अनाज मुहैया कराया जाएगा

सूडान से 186 भारतीयों का एक और जत्था स्वदेश लौटा

नयी दिल्ली। हिंसाग्रस्त सूडान से अपने नागरिकों को वापस लाने के भारत के अभियान 'ऑपरेशन कावेरी' के तहत सोमवार को 186 भारतीय स्वदेश लौटे। भारत ने हिंसा से प्रभावित सूडान से अपने नागरिकों को निकालने के लिए पिछले सप्ताह 'ऑपरेशन कावेरी' शुरू किया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने ट्वीट किया, ''ऑपरेशन कोवरी के तहत भारतीय नागरिकों का लौटना जारी। 186 यात्रियों के साथ एक विमान कोच्चि पहुंचा।'' ज्ञात हो कि रविवार को इस अभियान के तहत 229 भारतीय बेंगलूरू पहुंचे थे, जबकि इसके एक दिन पहले 365 भारतीय नागरिक दिल्ली आए। वहीं, इस निकासी अभियान के तहत शुक्रवार को दो जत्थों में 754 नागरिक भारत लौटे थे। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अब तक ऑपरेशन कावेरी के तहत भारत लौटने वाले भारतीयों की संख्या 2,140 हो गई है। 'ऑपरेशन कावेरी के तहत भारत ने जेद्दा में पारगमन सुविधा स्थापित की है। सूडान से निकाले जाने के बाद भारतीय नागरिकों को सऊदी अरब के इस शहर में लाया जा रहा है। भारत ने सऊदी अरब के शहर जेद्दा में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया है ताकि सूडान से भारतीय नागरिकों को निकालने में सुविधा हो सके। सूडान में करीब 3,000 भारतीयों को निकालने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। सूडान से निकासी अभियान में भारतीय नौसेना के जहाज आईएनएस सुमेधा, आईएनएस तेग और आईएनएस तरकश शामिल हैं। इसके अलावा भारतीय वायु सेना का विमान भी इसमें शामिल है। इस अभियान के तहत पोर्ट सूडान और जेद्दा में जरूरी आधारभूत ढांचा तैयार किया गया है। सूडान में सेना और एक अर्द्धसैनिक समूह के बीच सत्ता हासिल करने के लिए भीषण संघर्ष जारी है।

ठाणे में 9.6 लाख रुपये के मादक पदार्थ के साथ तीन लोग गिरफ्तार

ठाणे। महाराष्ट्र पुलिस ने ठाणे शहर में 240 ग्राम मादक पदार्थ (मेफेड्रोन) के साथ तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। एक पुलिस अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि बरामद मादक पदार्थ की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 9.6 लाख रुपये है। सहायक पुलिस आयुक्त (अपराध) नीलेश सोनवणे ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर वागले एस्टेट पुलिस की अपराध इकाई–पांच ने शनिवार को जाल बिछाया और वहां मादक पदार्थ बेचने आए तीनों लोगों को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि आरोपियों के पास से 9.6 लाख रुपये मूल्य का 240 ग्राम मेफेड्रोन बरामद किया गया। अधिकारी ने कहा कि आरोपियों में से एक आदतन अपराधी है जो चार महीने पहले जेल से छूटा था। वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक विकास घोडके ने कहा कि तीनों को एक स्थानीय मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया जिन्होंने उन्हें दो मई तक पुलिस हिरासत में भेज दिया।

बीजेपी सरकार ने 'तुष्टीकरण' के बजाय विकास पर ध्यान केंद्रित किया : योगी आदित्यनाथ

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार ने 'तुष्टीकरण' के बजाय विकास पर ध्यान केंद्रित कर लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि राज्य में अब 'माफिया राज' नहीं है और गुंडे जो पहले खुला घूमते थे अब गले में तख्ती लटका कर दया की भीख मांग रहे हैं। उत्तर प्रदेश में चार मई और 11 मई को दो चरणों में नगर निकाय चुनाव होगा। मुरादाबाद में भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में आयोजित एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए योगी आदित्यानाथ ने कहा कि भाजपा सरकार 'सबका साथ सबका विकास' के मूल मंत्र को लेकर आगे बढ़ रही है।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि–ईदगाह विवाद में हाईकोर्ट ने दिया बड़ा फैसला, अब नए सिरे से सुनवाई होगी

मथुरा । श्री कृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मस्जिद जमीन विवाद मामले में इलाहबाद हाईकोर्ट ने अहम फैसला सुनाया है। इस फैसले के अंतर्गत शाही ईदगाह ट्रस्ट और यूपी सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की याचिकाओं को निस्तारित कर दिया गया है। हाईकोर्ट ने आदेश दिया है कि मथुरा के जिला जज इस मामले में नए सिरे से सुनवाई शुरु करे। अदालत के आदेश के अनुसार सभी पक्षकारों को मथुरा के जिला जज के समक्ष नए तरीके से अपनी दलीलों को पेश करना होगा। यानी हाईकोर्ट ने पूरे केस को मथुरा के जिला जज को वापस भेज दिया है। अब इस मामले में जस्टिस प्रकाश पाडिया की के आदेश के मुताबिक सुनवाई मथुरा के जिला जज के समाने होंगी। इस मामले में सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की याचिका पर हस्तक्षेप करने से न्याायलय ने इंकार कर दिया है।

ये है मामलाः मथुरा कोर्ट में श्रीकृष्ण विराजमान की ओर से कहा गया कि याचिका को खारिज किया जाए। इस अर्जी पर जिला जज ने सिविल कोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया है। इसकी सुनवाई का आदेश पारित किया है। जिला जज की ओर से जारी इस आदेश को ईदगाह ट्रस्ट कमेटी और सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने चुनौती दी थी। इस मामले पर ही कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया है। बता दें कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि और ईदगाह का विवाद पूरे 13.37 एकड़ जमीन को लेकर है। इस जमीन के मालिकाना हक को लेकर दोनों ही पक्ष आपस में लड़ रहे है। श्रीकृष्ण जन्मस्थान के पास 10.9 एकड़ जमीन का मालिकाना हक है। वहीं ढाई एकड़ जमीन का मालिकाना हक शाही ईदगाह मस्जिद के पास है। वहीं हिंदू पक्ष का दावा है कि शाही ईदगाह मस्जिद की जमीन पर भी हिंदूओं का ही हक है, जिसका की शाही ईदगाह द्वारा विरोध किया जा रहा है।

जंतर–मंतर पर जाकर महिला पहलवानों के मन की बात सुनें पीएम मोदी: सिब्बल

नयी दिल्ली। राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जंतर–मंतर जाकर प्रदर्शनकारी महिला पहलवानों के ''मन की बात'' सुनने का अनुरोध करते हुए कहा कि इस तरह के कदम साबित होगा कि प्रधानमंत्री उनके दर्द को समझने को तैयार हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल पहलवानों की ओर से उच्चतम न्यायालय में पैरवी कर रहे हैं। उनकी टिप्पणी मोदी के मन की बात रेडियो कार्यक्रम की 100वीं कड़ी के प्रसारण के एक दिन बाद आयी है।

सिब्बल ने ट्वीट किया, ''मोदी जीरू आपके 100वें मन की बात कार्यक्रम के लिए बधाई। मोदी जी, यदि आपके पास समय हो तो कृपया जंतर–मंतर जाएं और प्रदर्शनकारी महिला पहलवानों के मन की बात सुनें। उन्होंने कहा, ''यह दिखाएगा कि हमारे प्रधानमंत्री उनके दर्द को समझने को तैयार हैं।'' दिल्ली पुलिस ने सात महिला पहलवानों द्वारा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद एवं भारतीय कुश्ती महासंघ के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर शुक्रवार को दो प्राथमिकी दर्ज कीं। ये दोनों प्राथमिकी दिल्ली पुलिस की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता द्वारा प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा की पीठ को यह बताये जाने के कुछ घंटे बाद दर्ज की गईं कि शुक्रवार को मामला दर्ज किया जाएगा। पहली प्राथमिकी एक नाबालिग पहलवान के आरोपों से संबंधित है और यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के तहत दर्ज की गई है, वहीं दूसरी महिलाओं की मर्यादा को ठेस पहुंचाने से संबंधित है। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का नाम रोशन करने वाले कई पहलवान जंतर–मंतर पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और मांग कर रहे हैं कि सरकार सिंह के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच करने वाली निगरानी समिति के निष्कर्षों को सार्वजनिक करे। पहलवानों ने इस बात पर जोर दिया है कि जब तक सिंह को गिरफ्तार नहीं किया जाता, वे प्रदर्शन स्थल नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने पिछले सप्ताह अपना धरना फिर से शुरू किया था और मांग की थी कि आरोपों की जांच करने वाली समिति के निष्कर्षों को सार्वजनिक किया जाए।

छात्र छात्राओं को मेडल देकर किया गया सम्मानित

स्कूल की छात्रा कोमल को मिला हाई स्कूल की परीक्षा में गोंडा जिले में पांचवा स्थान क्षेत्र का व जिले का नाम किया रोशन

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। स्कूल की छात्रा को मिला हाई स्कूल की परीक्षा में गोंडा जिले में पांचवा स्थान क्षेत्र का व जिले का नाम किया रोशन मेडल व पुरस्कार देकर किया गया सम्मानित। जिले में पांचवा व कालेज में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रा के साथ ही अन्य मेधावियों को विद्यालय ने मेडल व पुरुस्कार देकर सम्मानित किया व उनके उज्जवल भविष्य की कामना की मेडल व पुरस्कार पाकर छात्र–छात्राओं ने जताया खुशी।खरगूपुर क्षेत्र के श्री गुरुकुल मदन मोहन इंटर कॉलेज फतेहगढ़ की छात्रा कोमल शुक्ला को हाई स्कूल की परीक्षा में जिले में पांचवा व स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

वहीं हिमांशु द्विवेदी को स्कूल में द्वितीय,शैलेश कुमार शुक्ला को तृतीय, नीलम को चौथा काजल को पांचवा हर्ष शुक्ला को छठवां आस्था को सातवां लक्ष्मी को पूजा नौवां रीता को दसवां व शिवांशी को 11वां स्थान प्राप्त हुआ है।स्कूल के प्रबंधक भूपेंद्र कुमार तिवारी प्रधानाचार्य दर्शन कुमार सोनकर ने सभी छात्र–छात्राओं को फूल माला पहनाकर मेडल व पुरस्कार देकर सम्मानित किया। विद्यालय परिवार ने सभी छात्र छात्राओं को खूब पढ़ो खूब बढ़ो के मंत्र के साथ भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।सम्मान समारोह में पूनम मिश्रा, जगदंबा प्रसाद मिश्रा, जितेंद्र कुमार पाठक, रामकिशोर पांडे, मालिकराम भवानी, अमरेश कुमार मिश्रा, चंद्रशेखर तिवारी, नीरज तिवारी, शेषराम, रमन शुक्ला, सरिता शुक्ला, ममता तिवारी, ममता मिश्रा, नीलू त्रिपाठी, आलोक कुमार त्रिपाठी सहित अध्यापक व अभिभावक मौजूद रहे।

बच्चो ने बढ़ाया मान, सागर ने 91.66% लाकर विद्यालय टॉप किया

दैनिक बुद्ध का संदेश

तुलसियापुर,बलरामपुर। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया है। परीक्षा परिणाम आते ही बढ़नी ब्लाक के नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय औदही के बच्चों ने शत प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय परिवार का नाम रोशन किया है। वहीं बच्चों में बहुत खुशी की लहर है। पढ़ाई–लिखाई को लेकर काफी उत्साहित हैं। प्रधानाध्यक इरशाद अहमद ने बताया कि हमारे विद्यालय में इस बार शत प्रतिशत बच्चों ने सर्वाधिक अंक लाकर विद्यालय परिवार का नाम रोशन किया है। सागर कुमार विश्वकर्मा ने 91.66% लाकर विद्यालय को टॉप किया है। वहीं मनीष 86.33% मोनू गौड़ 84.83% ममता कुमारी 78.83% और जनक नंदनी 76.16% ने अंक प्राप्त अपने माता पिता के साथ क्षेत्र का नाम रोशन किया है। मैं उत्तीर्ण हुए सभी छात्रों की उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। सरकारी विद्यालय में शिक्षको और विद्यार्थियों की लगन से शत प्रतिशत परिणाम आया है। मैं निरंतर प्रयास करूंगा कि बच्चों की सर्वांगीण विकास के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की अच्छा से अच्छा जानकारी दिया जाएं। विद्यालय के सभी आध्यापको ने उत्तीर्ण हुए मेधावी छात्रों को मिठाई खिलाकर उन्हें प्रोत्साहित किया। इस दौरान विद्यालय के अध्यापक शिव कुमार (स0 अ0), ओम प्रकाश जैसवाल, अनिल कुमार, रमेश कुमार यादव, पंकज सिंह, शिल्पी केशरवानी, सुमन देवी अब्दुल मतीन, कपिल देव, सुरेश कुमार आदि मौजूद रहे।

प्रमिला जायसवाल ने मतदाताओं से जनसंपर्क कर जीत का मांगा आशीर्वाद

मेहदावल नगर के कई वार्डो में सोमवार को चलाया सघन जनसंपर्क अभियान

दैनिक बुद्ध का संदेश

संतकबीरनगर। मेहदावल निवर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष एवं बसपा उम्मीदवार प्रमिला जायसवाल ने सोमवार को नगर पंचायत के दर्जनों वार्ड में अपने सहयोगियों के साथ सघन जनसंपर्क अभियान चलाया। मतदाताओं के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए सरलता के साथ अपने कार्यकाल के विकास की उपलब्धियों को खिलाने के साथ ही शीत का आशीर्वाद मांग रही है। निवर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष बसपा उम्मीदवार को लोगों का भरपूर सहयोग व समर्थन मिलता नजर आ रहा है। बहुजन समाज पार्टी के मेहदावल नगर पंचायत से अध्यक्ष पद की उम्मीदवार निवर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष प्रमिला जयसवाल के तूफानी जनसंपर्क के सामने अन्य विपक्षी बौना साबित हो रहे हैं। सोमवार को नगर पंचायत के कई वार्डों जनसंपर्क के दौरान नगर पंचायत के विकास कार्यों की बात रखते हुए उन्होंने मतदाताओं से जीत का आशीर्वाद लिया। जनसंपर्क के दौरान मतदाताओं का भरपूर सहयोग व समर्थन उनके पक्ष में दिखाई दे रहा है। नगर छात्र छात्राओं के लिए निशुल्क पुस्तकालय युवा वर्ग को जहां आकर्षित कर रहा है वही शहीद गणेश शंकर पार्क मेहदावल नगर पंचायत के विकास को दरकिनार करने वाले लोगों को आईना भी दिखा रहा है। इस दौरान अनमोल जयसवाल विनोद यदुवंशी मनीष गौड़ मनोज कसेरा प्रभाकर समेत कई लोग मौजूद रहे।

अनियंत्रित हो सड़क किनारे गड्ढे में गिरी ट्रैक्टर ट्राली,एक की मौत

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटियाथोक,गोंडा। इटियाथोक क्षेत्र के इटियाथोक–खरगूपुर मार्ग स्थित बेंदुली गांव के समीप मोड़ पर एक ट्रैक्टर ट्राली अनियंत्रित होकर गड्ढे में पलट गई। हादसे में ट्रैक्टर सवार एक युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। रास्ते से गुजर रहे भवानीपुर उपाध्याय निवासी नरेंद्र मिश्रा के सूचना पर पहुंची पुलिस ने आनन–फानन में जेसीबी मंगवाकर ट्रैक्टर के नीचे दबे युवकों को बाहर निकलवाकर उपचार के लिए अस्पताल भिजवाया। ग्रामीणों के मुताबिक एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई थी वहीं दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल था। कौड़िया थाना क्षेत्र के जेठपुरवा पंचायत के मजरा मुजेंड़ गांव निवासी रामबाबू पासवान व संजीत पासवान सड़क बनाने का काम करते हैं। रविवार रात 10 बजे के करीब खरगूपुर रोड से इटियाथोक के तरफ ट्रैक्टर ट्राली से आ रहे थे। बेंदुली गांव के समीप मोड़ पर अचानक ट्रैक्टर ट्राली अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गड्ढे में पलट गई। हादसे में दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक संजीत पासवान की मौके पर मौत हो गई जबकि रामबाबू का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। घटना से गांव में मातम छाया हुआ है। परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

डीएम ने किया स्ट्रांग रूम का निरीक्षण

सीसीटीवी कैमरा सहित अन्य व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने का दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। डॉ महेंद्र कुमार द्वारा नगर निकाय इलेक्शन के तहत मंडी परिषद बलरामपुर एवं तुलसीपुर में मतगणना स्थल तथा स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया गया। उन्होंने मतदान के बाद बैलट बॉक्स स्ट्रांग रूम में रखे जाने की तैयारियों का जायजा लिया। स्ट्रांग रूम में सीसीटीवी कैमरा की व्यवस्था एवं गार्द रूम के लिए आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया। स्ट्रांग रूम से मतगणना स्थल तक के बैलट बॉक्स ले जाने का गलियारा आदि का जायजा लिया एवं सुरक्षा व्यवस्था संबंधी आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक केशव कुमार, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व प्रदीप कुमार, अपर पुलिस अधीक्षक नम्रिता श्रीवास्तव, एसडीएम तुलसीपुर मंगलेश दुबे, क्षेत्राधिकारी तुलसीपुर उपस्थित रहे।

केटी तिवारी के समर्थन में धरा पर उतरी कांग्रेस कमेटी मांगा समर्थन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोण्डा। नगर पंचायत तरबगंज चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने के0टी तिवारी पर दांव लगाया है। और मैदान में उतारा है।जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रमोद मिश्रा व कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता जिला प्रवक्ता शिव कुमार दुबे, पीसीसी सदस्य कांग्रेस पूर्व विधानसभा प्रत्याशी त्रिलोकी नाथ तिवारी जिला उपाध्यक्ष, तवाज खान, महामंत्री अशोक सिंह, सहित सैकड़ों कांग्रेसी नेताओं ने जनसमर्थन में उतर कर मतदाताओं से जीतने की अपील की और लोगों से आशीर्वाद मांगा। कहा कि अगर कांग्रेस प्रत्याशी की जीत हुई, तो तरबगंज को आदर्श नगर पंचायत के रूप में स्थापित कराने का काम किया जाएगा, कहा कि बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए खेल मैदान बनाया जाएगा, पार्क की स्थापना कराया जाएगा। महिलाओं के लिए निशुल्क शौचालय की व्यवस्था कराई जाएगी। टैक्स को कम किया जाएगा गली मोहल्लों की सड़कों को बनाया जाएगा। एवं साफ–सफाई पर निगरानी रखी जाएगी।

बजरंगबली के आशीर्वाद लेकर निकली आशीर्वाद रैली

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू के समर्थन में वीर विनय चौराहा स्थित हनुमानगढ़ी मंदिर से जन आशीर्वाद रैली निकाली गई। रैली वीर विनय चौराहा से पुरानी चौक बाजार, बड़ा पुल चौराहा, सिटी पैलेस, मेजर चौराहा, बैठकर तिराहा होते हुए मंदिर पर पहुंचकर समाप्त हुई।

रैली की अगुवाई सदर विधायक पलटूराम, हनुमानगढ़ी मंदिर महंत महेंद्र दास, जिलामहामंत्री वरुण सिंह मोनू प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अजय सिंह पिंकू, ब्राह्मण नेता महेश शुक्ला बच्चा, जिला महामंत्री बिंदु विश्वकर्मा, जिला मंत्री साधना पांडे, नगर अध्यक्ष कृष्ण गोपाल गुप्ता, भाजपा नेता प्रवीण सिंह, संजय शर्मा, शिव कुमार द्विवेदी, बृजेंद्र तिवारी, महिला मोर्चा पूर्व जिला अध्यक्ष मंजू तिवारी, स्वर्ण लता श्रीवास्तव, अमन बंसल, सरदार मनप्रीत सिंह, प्रवेश दुबे मोनू, साधना पांडे, अभिषेक शर्मा आदि लोग कर रहे थे। आशीर्वाद रैली रिम बारिश के बीच नारेबाजी के साथ नगर के मुख्य बाजार में निकाली गई। आशीर्वाद रैली में नगर पालिका अध्यक्ष प्रत्याशी धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू, सदर विधायक पलटूराम, महंत महेंद्र दास सहित तमाम लोगों का लोगों ने माल्यार्पण व आशीर्वाद रैली पर पुष्प वर्षा भी किया। रैली में लोगों ने निकल कर प्रत्याशी धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू जन समर्थन व आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सरदार भूपेंद्र सिंह, शिव कुमार चौरसिया, डब्लू चौरसिया, शरद गुप्ता, कृष्ण कुमार तिवारी, रवि गुप्ता, संजय शुक्ला, अभिषेक पांडे रवि, प्रिंस पांडे, गौरव शुक्ला तमाम लोग मौजूद थे।

- समर्थकों व भाजपाइयों ने धीरू के समर्थन में निकाली रैली
- बीच में शुरु हुई बारिश के बाद भी नहीं हुआ उत्साह कम

2 मई को शाम 6.00 से थम जाएगा चुनाव प्रचार

दैनिक बुद्ध का संदेश

उतरौला,बलरामपुर। प्रथम चरण में नगर निकाय चुनाव के लिए सभी उम्मीदवारों ने जोरों शोरों से चुनाव प्रचार किया और जनसभाओं में जनता को संबोधित किया। लेकिन अब निकाय चुनाव में 2 मई की शाम 6:00 से चुनाव प्रचार थम जाएगा। पहले चरण का मतदान 4 मई को होगा। यहां 48 घंटे पहले प्रचार बंद करना होगा। इसलिए प्रचार थमने से पहले सभी दल प्रचार में अपनी पूरी ताकत लगा देंगे। बता दें कि, प्रथम चरण के मतदान 4 मई को समय सुबह 7:00 से शाम 6:00 बजे तक है। मतदान की समाप्ति से 48 घंटे पहले चुनाव प्रचार बंद करने का नियम है। सार्वजनिक सभा आदि भी इससे पहले ही समाप्त करनी होगी। ऐसे में प्रचार बंद होने तक सभी दल पूरी ताकत प्रचार में लगाएंगे और जन सभाएं और रैलियां करेंगे। 2 मई की शाम छह बजे 37 जिले में चुनाव प्रचार थम जाएगा। ऐसे में प्रत्याशियों ने इससे पहले ही अपने पूरे दांवपेंच शुरू कर दिए हैं। मतदाताओं को लुभाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं। ऐसे में दो मई की शाम को छह बजे से पहले प्रचार बंद होने तक सभी दल पूरी ताकत प्रचार में लगाएंगे।

ट्रेन पर चढ़कर सेल्फी ले रहा युवक हाईटेंशन लाइन की चपेट में आकर घायल

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटियाथोक,गोंडा। इटियाथोक क्षेत्र में रेलवे स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी पर चढ़कर सेल्फी बना रहा एक युवक 25000 वोल्ट हाईटेंशन लाइन की चपेट में गंभीर रूप से घायल हो गया। रेलवे कर्मचारियों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौजूद लोगों के सहयोग से घायल युवक को उपचार के लिए सीएचसी भिजवाया। जहां डॉक्टरों ने युवक की हालत नाजुक देख जिला अस्पताल रिफर कर दिया। मिली जानकारी के मुताबिक ताजा मामला इटियाथोक कस्बा स्थित रेलवे स्टेशन का है,जहां सोमवार सुबह परसिया बहोरीपुर गांव निवासी जलाल पुत्र डिप्टी नाम का एक युवक स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी पर चढ़कर सेल्फी बनाने लगा। इस बीच 25000 वोल्ट की हाईटेंशन लाइन के चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गया। फिलहाल घायल युवक की हालत नाजुक बनी हुई है। जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है।

आवारा कुत्तों के हमले में हिरण का बच्चा जख्मी

ग्रामीणों ने वनकर्मी को सौंपा, पशु चिकित्सक को मौके पर बुलाकर कराया उपचार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

इटियाथोक,गोंडा। स्थानीय क्षेत्र में पानी की तलाश में जंगल से भटक कर करुवापारा गांव पहुंचे हिरण के बच्चों पर आवारा कुत्तों ने हमला बोल जख्मी कर दिया। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे वन कर्मियों ने पशु चिकित्सक को मौके पर बुलाकर उसका उपचार कराया। मिली जानकारी के मुताबिक थाना इटियाथोक क्षेत्र के करुवापारा पंचायत स्थित गन्ना क्रय केंद्र के समीप सोमवार सुबह एक हिरण पानी की तलाश में जंगल से भटक कर पहुंच गया, यहां आवारा कुत्तों ने हिरण के बच्चे को देखकर उस पर हमला बोल दिया। कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीणों ने उन्हें खदेड़ कर हिरण की जान बचाई। ग्रामीणों ने जख्मी हिरन को कब्जे में लेकर वन विभाग को सूचना दी। मौके पर पहुंचे वनरक्षक स्वामीनाथ ने उसका उपचार कराया और अपने साथ ले जाकर कुआनो जंगल में छोड़ दिया।

विकास के लिए भाजपा को मिलेगी जीतः सांसद जगदम्बिका पाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजार,सिद्धार्थनगर। नगर निकाय चुनाव को लेकर सोमवार को उसका कस्बा के वेलकम हाल में भारतीय जनता पार्टी की ओर से कार्यकर्ता सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में भाजपा कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर भाजपा प्रत्याशियों को जीत दिलाने का संकल्प लिया है। कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए सांसद जगदम्बिका पाल ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने प्रदेश व देश का चहुमुखी विकास कर रही है। अब निकाय चुनाव में जीत के बाद त्रिपल इंजन की सरकार हो जाने से विकास को और गति मिलेगी। उन्होने कहाकि भाजपा की नीति सबका साथ सबका विकास है। ऐसे में सभी वर्गों के हित की दिशा में पार्टी काम कर रही है। पार्टी के सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर भाजपा प्रत्याशियों का जीत दिलाने का काम करे। इस दौरान भाजपा की नगर पंचायत अध्यक्ष प्रत्याशी मंजू जायसवाल, पूर्व चेयरमैन हेमन्त कुमार जायसवाल, सत्य प्रकाश वर्मा, राकेश आर्या, विशाल अग्रहरि, मनीष अग्रहरि, राहुल दूबे, धनेश वर्मा, अनिल यादव, सोमनाथ मिश्र, मकबूल आलम, रजत जायसवाल, संजय जायसवाल, वेद अग्रहरि, आशीष जायसवाल, अंकित पाण्डेय आदि रहे।

मजदूर दिवस के अवसर पर सेवानिवृत्त कर्मचारियों को किया सम्मानित

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। अंतराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। तहसील नौगढ़ के सभाकक्ष में सोमवार को समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप जिलाधिकारी सदर डॉ0ललित कुमार मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि तहसीलदार नौगढ़ आर.आर.रमन रहे। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जिलाध्यक्ष सुजीत कुमार जायसवाल की अध्यक्षता एवं कर्मचारी शिक्षक संयुक्त मोर्चा के जिलाध्यक्ष रामकरन गुप्ता के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में मजदूर दिवस के अवसर पर वक्ताओं ने अपने अपने विचार रखे।उपजिलाधिकारी डॉ0 ललित कुमार मिश्रा ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को राज्य कर्मचारी संयुक्त द्वारा सम्मानित किए जाने के कार्यक्रम की सराहना किया। सम्मानित होने वाले सेवानिवृत्त कर्मचारियों में सेवानिवृत्त नायब तहसीलदार रामचंद्र चौधरी, संग्रह अमीन दीप नरायन लाल श्रीवास्तव, एडीओ आईएसबी गणेश नारायण त्रिपाठी, अवधेश यादव, गणेश शंकर मिश्र, शंभू प्रसाद, राम समुझ, राम सुमेर, नियाज अहमद, श्रीराम सहित 21 सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। परिषद द्वारा आज विश्व मजदूर दिवस के अवसर पर देश के समस्त कमेरा वर्ग, केंद्रीय व राज्य कर्मचारियों, शिक्षकों, संविदा कर्मियों, शिक्षामित्रों, ग्राम रोजगार सेवक, पंचायत सहायक, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों व ठेका प्रथा से नियुक्त कर्मचारियों व मजदूरों के साथ ही समस्त मित्रों शुभचिंतकों को ढेरों शुभकामनाएं व बधाई दिया तथा भारत सरकार से मजदूरों के इस त्याग व बलिदान दिवस पर अपील किया कि पुनरू मजदूर हित में श्रम कानूनों की समीक्षा हो और पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करने का जन कल्याणकारी आदेश निर्गत किया जाए। इस अवसर पर परिषद के जिलामंत्री राजेश कुमार मिश्र, कृष्ण मोहन उपाध्याय, सुधीर श्रीवास्तव, धर्मेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

वैज्ञानिक विधि से बगीचा लगाएं किसान बढ़ाएं आय

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर,सिद्धार्थनगर। कृषि विज्ञान केंद्र सोहना सिद्धार्थनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. प्रवेश कुमार देहाती नें बताया किसान भाई वैज्ञानिक विधि से बगीचा लगाकर अधिक लाभ लें। बाग लगाते समय निम्न बातों का ध्यान रखें। 1. बाग लगाने के लिए खेत का चयन करते समय ध्यान रहे खेत में 2 मीटर की गहराई तक किसी प्रकार की सख्त परत ना हो, मृदा अत्यधिक लवणीय, अम्लीय एवं दल दली न हो, खेत का चुनाव करने के पश्चात खेत से सभी खरपतवार एवं झाड़ीदार पौधों को निकालकर खेत को समतल कर दें और तीन–चार जुताई करके पाटा लगाकर खेत को समतल कर दें। 2. फल वृक्षों के लिए उचित जल निकास वाली गहरी दोमट वा बलुई दोमट मिट्टी जिसमे पर्याप्त मात्रा में जीवांश पदार्थ उपलब्ध हो। 3. लवणीय मृदा में लवण सहनशील फल वृक्षों का

चयन करें जैसे अत्यधिक लवणीय मृदा में खजूर, जामुन, बेर मध्यम लवणीय मृदा में आंवला, फालसा, अमरुद, अंजीर, अनार एवं निम्न लवणीय मृदा में नींबू वर्गीय एवं आम का चयन करें। वायुरोधी पेड़ों का चयन एवं रोपण रू बाग में पौधों को हवा के तेज झोंके से बचाने के लिए वायुरोधी पौधों का रोपण करते हैं वायुरोधी पौधों का रोपण बाग के चारों तरफ करते हैं यदि खेत छोटा है तो उत्तर व पश्चिम दिशा में पौधों का रोपण करते हैं वायुरोधी पौधे जैसे. देशी आम, जामुन, बेल, शहतूत, देशी अंवाला, शिशम, कटहल, इमली आदि हैं। बाग लगाने का समय रू फलदार पौधों के रोपण हेतु फरवरी–मार्च व जुलाई से अगस्त का समय अति उत्तम होता है पर्वतीय पौधों का रोपण फरवरी मार्च में करते हैं तथा आम, अमरुद, नीबू, अनार, पपीता, जामुन, बेर आदि को जूलाई अगस्त में लगाते हैं। अच्छी किस्म का चुनाव रू फलों की किस्मों का चुनाव स्थानीय दशाओं को ध्यान में रखते हुए करते हैं। फलदार पौधों की उपयुक्त किस्में आम रू आम्रपाली, दशहरी, मल्लिका, लंगड़ा, पूसा सूर्या, पूसा पितांबर, चौसा, पूसा श्रेष्ठ आदि अमरुद रू इलाहाबादी सफेदा, सरदार, ललित, स्वेता, अर्का अमूल्य, आर्का मृदुला आदि अनार रू भगवा, गणेश, अरक्ता आदि पपीता रू पूसा नन्हा, पूसा डिलीशियस, पूसा मजेस्टी, पूसा जायंट, ताइवान, सूर्या आदि अंवाला रू हाथी झूल, बनारसी, नरेंद्र आमला–4, नरेंद्र अंवाला –7, नरेंद्र अंवाला –10 आदि बेल रू थार दिव्या, थार नीलकंठ, नरेंद्र बेल –5, नरेंद्र बेल–9, पंत सुजाता, सी.आई.एस. एच. बी. 1 एवं 2 आदि नीबू रू प्रमालिनी, विक्रम, कागजी कलां, साईं सरबती, पंत लेमन बेर रू थार सेविका, गोमा कीर्ति, थार भुज, गोला, सेब, कैंथली, उमरान, आदि जामुन रू नरेन्द्र जामुन –6, राज जामुन पौधे लगाने की विधि रू बगीचे लगाने के लिए वर्गाकार विधि सबसे आसान और सुगम है इसमें सभी शस्य क्रियाएं आसानी से की जा सकतीं हैं द्य और पौधों को पर्याप्त मात्रा में सूर्य की रोशनी और हवा मिलती रहती है गड्ढों की खुदाई एवं भराई रू खेत का रेखांकन करने के पश्चात गड्ढों की खुदाई का कार्य करते हैं बड़े फल वृक्षों जैसे आम, आंवला, कटहल, बेल, जामुन आदि के लिए 1×1×1(ल. ×चौं. ×ग.) मीटर आकर के गड्ढे पौधे से पौधे एवं लाईन से लाईन की दूरी 10 मीटर पर खोदे द्य मध्यम आकार वाले पौधों जैसे अमरुद, नीबू वर्गीय फल, अनार, आम की बैनी किस्म आम्रपाली आदि के लिए 0.75×0.75×0.75 मीटर आकर के गड्ढे पौधे से पौधे एवं लाईन से लाईन की दूरी 5 मीटर पर खोदे। छोटे आकार के फल वृक्षों जैसे पपीता, करौदा आदि के लिए 0.5×0.5×0.5 मीटर आकार के गड्ढे पौधे से पौधे एवं लाईन से लाईन की दूरी 2 मीटर पर खोदे। गड्ढों की खुदाई के गड्ढों को 20 से 30 दिन के लिए तेज धूप में खुला छोड़ देते हैं जिससे गड्ढों में उपस्थित कीड़े मकोड़े मर जायेगेद्य गड्ढे से निकली आधी मिट्टी में 20 से 25 किग्रा अच्छी तरह से सड़ी गोबर की खाद, 10 से 12 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट, 100 ग्राम पोटाश, 500 ग्राम नीम खली, 250 ग्राम फेनवैलरेट या मिथलाइल पैराथियांन को अच्छी तरह मिलाकर भर दें। गड्ढे को जमीन से 15 से 20 सेमी ऊपर तक भरें। 2 से 3 बारिश के पश्चात् मिट्टी नीचे बैठ जाती है इसके पश्चात् पौधों का रोपड़ करें।

अब्दुल वाहिद का हाजियों के सेवक के रूप में हुआ चयन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज,सिद्धार्थनगर। डुमरियागंज उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति लखनऊ द्वारा डुमरियागंज तहसील क्षेत्र के ग्राम बगहवा निवासी अब्दुल वाहिद अलीगी का वर्ष 2023 में हज यात्रा पर जा रहे यात्रियों का सेवक के रूप में चयन हुआ है। प्राथमिक विद्यालय मोकलपुर उर्फ गुलरिया के अध्यापक अब्दुल वाहिद अलीगी का चयन हाजियों के सेवक के तौर पर चयन हुआ है। वे वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश से हज यात्रा पर जाने वाले हज यात्रियों के सहायत एवं मार्गदर्शन करने के लिए मदीना मुनव्वरा और मक्का में कार्य करेंगे। उनके चयन पर परिवार सहित ग्राम वासियों में खुशी की लहर है। अब्दुल वाहिद के चयन पर प्रधानाध्यापिका शाहीन अख्तर, मौलाना फरोग अहमद, कारी जमील अहमद, मुफ्ती निजामुद्दीन, डॉ. शकील अहमद, मलिक जैद अहमद, डॉ. सर्वर जर्रार कादरी, रिजवान अहमद, अकील अहमद, मौलाना मुस्लिम आदि लोगों ने खुशी का इजहार करते हुए बधाई दी है।

सपा प्रत्याशी पूनम उपाध्याय पत्नी डॉक्टर सत्य प्रकाश उपाध्याय ने तेज किया जनसंपर्क

वायदा नही नगर पंचायत नगर बाजार का होगा विकास डा सत्य प्रकाश उपाध्याय

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। नगर निकाय चुनाव के नामांकन के बाद प्रत्याशियों ने जनसम्पर्क अभियान तेज कर दिया, सभी दलों के नेता मतदाताओं

को लुभाने के लिए तमाम प्रकार के वायदे भी कर रहे है तो वही मतदाता भी परखने में लगा है कि कौन प्रत्याशी क्षेत्र का वास्तविक विकास कर सकता है। इसी क्रम में जिले की नगर पंचायत नगर बाजार के लिए सभी प्रत्याशियों ने अपनी–अपनी जोर ताकत झोंकना शुरू कर दिया है। नगर पंचायत नगर बाजार से अध्यक्ष पद के सपा प्रत्याशी पूनम उपाध्याय पत्नी डा सत्यप्रकाश ने नगर पंचायत, अनेक गांव में जनसमर्क अभियान चलाया उन्होंने नगर वासियों से अपील किया कि वह नगर के विकास के नाम पर वोट करें। उन्होंने कहा कि अगर हम आपके वोटों के द्वारा नगर पंचायत अध्यक्ष पद पर विजय होते हैं तो सबसे पहली प्राथमिकता नगर पंचायत नगर बाजार की विकास की गति पर जोर देंगे। नगर पंचायत की सफाई व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। उसको सही कराया जाएगा और व्यापारियों की समस्याओं को प्रमुखता से निदान किया जाएगा, नगर पंचायत नगर बाजार में बिजली, पानी, सड़क, सफाई, शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार कराया जाएगा। पूनम उपाध्याय पत्नी सत्यप्रकाश उपाध्याय ने नगर पंचायत के समस्त क्षेत्रवासियों से अपील किया कि नगर पंचायत का विकास करने वाले प्रत्याशी का चयन करें किसी के बहकावे में ना आये।

भाजपा प्रत्याशी नंदलाल गुप्ता ने किया जनसंपर्क,विकास के नाम पर मांगा आशीर्वाद

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। नगर निकाय चुनाव के नामांकन के बाद प्रत्याशियों ने जनसमर्क अभियान तेज कर दिया है सभी दलों के नेता अपने मतदाताओं को लुभाने के लिए तमाम प्रकार के वायदे भी कर रहे है तो वही मतदाता भी परखने में लगा है कि कौन प्रत्याशी क्षेत्र का वास्तविक विकास कर सकता है। इसी क्रम में जिले की नगर पंचायत हरैया चुनाव के लिए सभी प्रत्याशियों ने अपनी–अपनी जोर ताकत झोंकना शुरू कर दिया है। नगर पंचायत हरैया से अध्यक्ष पद के भाजपा प्रत्याशी नंदलाल गुप्ता ने नगर पंचायत, अनेक गांव में जनसमर्क अभियान चलाया उन्होंने नगर वासियों से

अपील किया कि वह नगर पंचायत के विकास के नाम पर वोट करें। उन्होंने कहा कि अगर हम आपके वोटों के द्वारा नगर पंचायत अध्यक्ष पद पर विजय होते हैं तो सबसे पहली प्राथमिकता नगर पंचायत हरैया की विकास की गति पर जोर देंगे। नगर पंचायत की सफाई व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। उसको सही कराया जाएगा और व्यापारियों की समस्याओं को प्रमुखता से निदान किया जाएगा, नगर पंचायत हरैया में बिजली,पानी, सड़क, सफाई, शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार कराया जाएगा। हरैया नगर पंचायत के समस्त क्षेत्रवासियों से अपील किया कि नगर पंचायत हरैया का विकास करने वाले प्रत्याशी का चयन करें किसी के बहकावे में ना आये। जनसमर्क के दौरान अनेक गांव में लोगो से मिलकर आशीर्वाद मांगा।

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने कार्यक्रम स्थल का किया गया निरीक्षण

■ मुख्यमंत्री उ0प्र0 सरकार योगी आदित्यनाथ संभावित आगमन 3 मई को होगा

दैनिक बुद्ध का संदेश

संतकबीरनगर। संभावित आगमन के दृष्टिगत आज दिनांक 01.05.2023 को जिलाधिकारी संदीप कुमार व पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता द्वारा संयुक्त रुप से कार्यक्रम स्थल

जूनियर हाई स्कूल खलीलाबाद व पार्किंग स्थल आदि के सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु स्थलीय निरीक्षण किया गया तथा कार्यक्रम के दृष्टिगत किये जा रहे व्यापक प्रबंधो की समीक्षा की गयी व सुरक्षा व्यवस्था संबंधी तैयारियों के संबंध में संबंधित को आवश्यक दिशा–निर्देश दिये गये।

बेलहर नगर में बहुजन समाज पार्टी के चुनाव प्रचार कार्यालय का हुआ उद्घाटन

पूर्व विधायक भगवान दास ने फीता काटकर किया उद्घाटन

दैनिक बुद्ध का संदेश

संतकबीरनगर। बेलहर नगर पंचायत में नगर निकाय चुनाव अपने रफ्तार से आगे बढ़ रही है। चुनावी प्रणाली के संचालन के लिए तेजी से प्रत्याशी भी तत्परता से अपने कार्य को निष्पादित कर रही है। इसी कड़ी में बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी नीतू राय द्वारा अपने चुनावी प्रचार कार्यालय को आरंभ किया गया। इस चुनावी कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक भगवान दास पंहुचे। पूर्व विधायक ने बसपा कार्यालय का फीता काटकर उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के दौरान एक जनसभा का भी आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि रहे पूर्व विधायक भगवान दास ने कहा कि बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती ने अपने कार्यकाल में प्रदेश के हर क्षेत्र में कानून व्यवस्था बेहतर रही है। गरीब, किसान, मजदूर, महिलाओं आदि के कल्याण के लिए अनेकों योजनाओं को लायी थी। लेकिन वर्तमान सरकार हर क्षेत्र में विफल है।

इस बार निकाय चुनाव में बसपा पूरे दमखम से चुनाव लड़ रही है और सभी पार्टी के प्रत्याशियों को कड़ी टक्कर दे रही है। इस तरह से उद्घाटन के दौरान आमजनता से बसपा के पक्ष में जनसमर्थन मांगा गया। इस अवसर पर रामदयाल उर्फ दयालु ने भी बसपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि–जनता नगर पंचायत अध्यक्ष के कुर्सी पर पंहुचाती है तो जो काम होंगे वह सभी पूरे होंगे और नगर के हर क्षेत्र के विकास के लिए नई नई योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। बेलहर नगर पंचायत चुनाव में झंडा बुलंद करना हम सभी का लक्ष्य होगा। आप लोगों की सफलता और आशीर्वाद से हमें कोई रोक नहीं सकता है। इस तरह से अनेकों बातो को कहा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामकेश राव द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व विधायक भगवान दास, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष त्रियचगानंद गौतम, विनोद यादव, विधानसभा अध्यक्ष रामकेश राव, जिला अध्यक्ष धर्मदेव प्रियदर्शी, पूर्व विधायक ताबिश खान राजेंद्र प्रसाद आजाद, कुलदीप मणि मिश्रा, राम लोट, दयाशंकर उर्फ दयाल, सेक्टर अध्यक्ष दिनेश चंद्र, कैलाश मास्टर साहब आदि सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

एआई से उथल–पुथल

यूरोपीय आयोग की एक पहल की है, जिसमें स्वचालित निर्णय करने वाली प्रणालियों को रेगुलेट किया जाना है। यूरोपीय संघ के प्रस्ताव में उन हाई–रिस्क एप्लीकेशनों की सूची शामिल है, जिन्हें चालू करने से पहले मंजूरी की जरूरत होगी। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक स्थानों पर लोगों की शिनाख्त के लिए ...

फिलहाल यही कहा जा सकता है कि एआई से वैसी ही चिंताएं पैदा हुई हैं, जैसा हर नई तकनीक के साथ होता रहा है। अनुभव यही है कि मनुष्य आखिरकार तकनीक का इस्तेमाल करना और उसे नियंत्रित रखना भी सीख लेता है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) की दुनिया में हाल में हुई प्रगति उथल–पुथल मचा दी है। अभी अमेरिका में विकिसत हुए चौटजीपीटी के करिश्माई कार्यों से लोग एडजस्ट भी नहीं कर पाए हैं कि अमेरिकी कंपनी ने माइक्रोसॉफ्ट ने आगाह कर दिया है कि चीन में उसे टक्कर देने वाले ऐप आने वाले हैं। अमेरिका में सामने आईं चौटजीपीटी, स्टेबल डिफ्यूजन या आइवा जैसी एआई प्रणालियां लोगों के मनमुताबिक टेक्स्ट लिख डालते हैं, मनमुताबिक छवियां गढ़ देते हैं या संगीत की रचना कर लेते हैं। और ये सब काम चुटकियों में हो जाता है। काम इतना विस्तृत और मुकम्मल होता है कि लोग दांतों तले अंगलियां दबा लेते हैं। विशेषज्ञों ने कहा है कि एआई के आने के बाद वे रचनात्मक सेवाएं अब बड़े पैमाने पर तैयार की जा सकती हैं, जो पहले आला दर्जे के विशेषज्ञ ही मुहैया करा पाते थे। हाल में जर्मन क्रिएटिव इंडस्ट्री से जुड़े 15 संगठनों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विषय पर ष्एआई बट फेयरष नारे के तहत एक पॉलिसी पेपर

प्रकाशित किया है। पर्चे में कहा गया है कि कॉपीराइट कानून को अविलंब मजबूत बनाने की जरूरत है, ताकि रचनाशील पेशेवरों को अपनी मेहनत का इनाम मिलता रह सके। दरअसल, अल्गोरिद्म आधारित एआई सिस्टम मुनासिब प्रशिक्षण सामग्री के बिना टेक्स्ट, छवियां या संगीत नहीं तैयार कर सकते हैं। बहरहाल, इस बारे में अब कानून बनाने की मांग भी उठने लगी है। व्यवहारिक तौर पर कमोबेश सभी यही मानते हैं कि कानूनों के बगैर तो एआई के प्रभावों को नियंत्रित करना कठिन है। यूरोपीय आयोग की एक पहल की है, जिसमें स्वचालित निर्णय करने वाली प्रणालियों को रेगुलेट किया जाना है। यूरोपीय संघ के प्रस्ताव में उन हाई–रिस्क एप्लीकेशनों की सूची शामिल है, जिन्हें चालू करने से पहले मंजूरी की जरूरत होगी। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक स्थानों पर लोगों की शिनाख्त के लिए बायोमीट्रिक सिस्टम का रियल–टाइम उपयोग कुछ अपवादों तक सीमित रखना होगा, मसलन आतंकवाद से लड़ाई के लिए। बहरहाल, फिलहाल यही कहा जा सकता है कि एआई से वैसी ही चिंताएं पैदा हुई हैं, जैसा हर नई तकनीक के साथ होता रहा है। अनुभव यही है कि मनुष्य आखिरकार तकनीक का इस्तेमाल करना और उसे नियंत्रित रखना भी सीख लेता है।

पहली बार सनातनी समाज को गोस्वामी तुलसीदास ने एकत्रित किया

भारत में जब इस्लामिक सत्ता थी और मुगलिया सल्तनत की तूती बोलती थी तब गोस्वामी तुलसीदास जी ने गांव गांव और नगर नगर में शिव लिंग की स्थापना करवाई। काशी में निवास करते हुए वे देवाधिपति महादेव की महिमा से परिचित थे। बहुत संभव है कि हर हर महादेव शंभू काशी विश्वनाथ गंगे के नारे को गोस्वामी तुलसीदास जी ने ही गढ़ा था। उस समय अकाल मौतें बहुत होती थीं। भुखमरी चरम पर थी। चावल, दाल, रोटी और सब्जी किसी किसी को नसीब होता था। बहुसंख्यक आदमी भाग्यवादी होते थे। भाग्वादी व्यक्ति और उससे निर्मित समाज असल में धार्मिक होता है। मध्ययुग 16 वीं शताब्दी का भारत धार्मिक वातावरण से अनुप्राणित था। ऐसे में गोस्वामी तुलसीदास जी 16 वीं शताब्दी के सबसे बड़े धार्मिक नेता थे। आप देखिए तो कबीर व्यापारिक समाज से आते हैं जबकि महानायक तुलसीदास जी का समाज ग्रामीण संस्कृति से अभिसिंचित है। नगर का भावपूर्ण बोध भी तुलसी की कविता को चरम उत्कर्ष पर ले जाता है। तुलसी कृषक जीवन को भलीभांति जानते हैं जबकि कबीर व्यापारिक जीवन की विषमताओं से भलीभांति परिचित कवि हैं। सूरदास चौबीस कैरेट के भक्त कवि हैं। वे कीर्तन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण करते हैं। जायसी की कविता में सूफी मतवाद का सम्मिश्रण है। गोस्वामी तुलसीदास जी विरले ऐसे कवि हैं जिनकी दुनिया में वृहद रचनात्मक संसार है। शत्रु हंता के रूप में प्रभु श्रीराम युगों युगों तक याद किए जाएंगे। कबीर हिंदू मुस्लिम के पेंच में उलझे हुए कवि हैं जबकि तुलसी जातिवादी सोच से ऊपर के कवि हैं। रावण ब्राह्मण था फिर भी रघुकुल के श्री राम रावण का वध करते हैं। उस समय की तीव्र होती हुई जातिगत चेतना का विलोप किए इतना बड़ा धार्मिक आंदोलन खड़ा करना संभव नहीं था। अतः तुलसीदास ने तत्कालीन विभाजित सनातनी समाज को एकत्रित किया। 16 वी शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास जी श्री रामचरित मानस के माध्यम से सबसे बड़े हिंदू नेता के रूप में प्रसिद्ध हुए।

लेखक विनय कांत मिश्र/दैनिक बुद्ध का संदेश

मन की बात के सौ एपिसोड

मगर अफसोस उन्होंने इस महत्वपूर्ण, शक्तिशाली साधन को अपने प्रचार के लिए इस्तेमाल किया। उनके मन की बात में न महिला सुरक्षा की बात है, न बेरोजगारी या महंगाई की, न आत्महत्या के बढ़ते प्रकरणों की, न किसानों या मजदूरों की दिक्कतों का जिक्र है। एक आभासी सकारात्मक माहौल बनाने की कोशिश है, जैसा सात–दस दिनों के ध्यान शिविरों में किया जाता है। वहां वास्तविक समस्याओं ...

भाजपा का प्रचार तंत्र कितना मजबूत है, इसका एक और उदाहरण रविवार 30 अप्रैल को देखने मिला, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के सौ एपिसोड पूरे हो गए। पिछले कुछ सालों में नयी सरकारों को सौ दिन का जश्न मनाते देखा गया है। जनता तो पांच साल का जनादेश देती है, लेकिन सरकारें अब शायद खुद को इतना कमजोर समझने लग गई हैं कि सौ दिन पूरे होने पर ही खुश हो जाती हैं। और अब ये देखना ही बाकी रह गया था कि प्रधानमंत्री के रेडियो कार्यक्रम के सौ एपिसोड होने पर उत्सव मनाया जाए। अक्टूबर 2014 से शुरु हुआ यह सिलसिला दूसरी बार 2019 में मिली जीत के बाद भी जारी रहा, तो जाहिर है कि इसके सौ एपिसोड होने ही थे। लेकिन अभी कई तरह की मुश्किलों से गुजर रही भाजपा ने इस मौके को भुनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। देश में कई प्लेटफार्म्स पर इसका लाइव प्रसारण हुआ। वैसे ही जैसे आधी रात को जीएसटी लागू करने की घोषणा की गई थी और इसके लिए संसद को वैसे ही सजाया गया था, मानो देश को आजादी मिली हो। स्वतंत्रता आंदोलन में तो संघ से जुड़े लोगों ने रत्ती भर योगदान नहीं दिया, अब उनके वारिस इस कोशिश में लगे हैं कि जनता को यकीन दिला सकें कि उनसे बढ़कर देशभक्त कोई नहीं है और देश को असली आजादी उनके कर्मों से मिल रही है। प्रधानमंत्री मोदी मन की बात में मोटिवेशनल स्पीकर यानी सकारात्मक विचारों की सीख देने वाले उपदेशक की तरह बात करते हैं। अच्छी बातों के प्रचार–प्रसार में कोई बुराई नहीं है। लेकिन इस काम के लिए और भी बहुत से लोग हैं। सोशल मीडिया पर करियर मार्गदर्शन से लेकर प्रेम में मिली निराशा को कैसे दूर किया जाए और दफ्तर के तनाव को कैसे कम किया जाए तक, कई किस्म की समस्याओं पर ज्ञान देने वाले भरे पड़े हैं। जब सोशल मीडिया नहीं था, तब भी आप जीत सकते हैं, जैसी किताबें थोक में बिका करती थीं। रेलवे स्टेशन और बस अड्डों पर इनके बहुत ग्राहक मिल जाते हैं। इनसे काम न बने, तो देश में कई तरह के बाबाओं की धार्मिक दुकानें ठाठ से चलती हैं, जहां लोग अपनी पीड़ाओं को लेकर पहुंचते हैं और चमत्कार का इंतजार करते हैं। इसलिए प्रधानमंत्री अगर सौ हफ्तों से उपदेश न भी देते, तो इस देश पर कोई फर्क नहीं पड़ता। अलबत्ता मन की बात करने की जगह अगर वे लोगों के मन को टटोलते तो देश कई मामलों में बेहतर स्थिति में होता। अपने सौवें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा के सुनील जगलान की बात की, जिन्होंने सेल्फी विद डॉटर अभियान शुरु किया। जो राज्य लैंगिक असमानता से जूझ रहा हो, वहां अपनी बेटी के साथ सेल्फी लेकर उसे गर्व का विषय बताना अच्छी बात है। श्री मोदी ने उनका जिक्र करते हुए कहा कि इस अभियान ने मुझे बहुत आकर्षित किया, क्योंकि इसमें मुख्य बिंदु बेटियां हैं। प्रधानमंत्री जब ये कह रहे थे, तब क्या उन्हें जंतर–मंतर पर बैठी बेटियों की याद नहीं आई, जो अपने साथ हुए एक गंभीर अपराध पर इंसाफ की मांग कर रही हैं। यह कैसा दोहरा रवैया है कि बेटियों के साथ सेल्फी खिंचाना तो अच्छा लग रहा है, लेकिन बेटियों की सुरक्षा पर एक लफ्ज नहीं कहा जा रहा, सिर्फ इसलिए क्योंकि जिस पर आरोप लग रहे हैं, वो आपकी पार्टी का एक बलशाली सांसद है। मन की बात के श्रोताओं और उसके प्रभाव को लेकर एक सर्वे भी आकाशवाणी और आईआईएम रोहतक ने किया है, जिसमें पता चला है कि 96 प्रतिशत जनता इसके बारे में जानती है और 23 करोड़ लोग इसे सुनते हैं। सर्वे में लोगों ने ये भी कहा है कि प्रधानमंत्री ज्ञानी हैं। अब सवाल ये है कि ऐसे किसी सर्वे का क्या औचित्य। टीवी चौनलों में टीआरपी की होड़ रहती है, क्योंकि वहां कई खिलाड़ी मैदान में हैं। लेकिन देश में तो मन की बात करने वाले अकेले श्री मोदी ही हैं। देश के प्रधानमंत्री हैं, तो जाहिर है उनके मासिक कार्यक्रम के बारे में लोगों को पता ही होगा। भाजपा को तो इस बात की चिंता करनी चाहिए कि इतने प्रचार–प्रसार के बावजूद 4 प्रतिशत लोगों को इस बारे में पता क्यों नहीं है। 130 करोड़ की आबादी में केवल 23 करोड़ लोग ही मन की बात को सुनते हैं, तो इससे यही पता चलता है कि लोग अपनी दिक्कतों और उनके समाधान के बारे में सुनने की इच्छा रखते हैं, और मन की बात में तो वास्तविक समस्याओं पर कोई बात ही नहीं होती। शायद इसलिए लगभग सौ करोड़ लोग इस कार्यक्रम को नहीं सुनते हैं। रहा सवाल प्रधानमंत्री के ज्ञानी होने का है, तो क्या इसे एक तथ्य के तौर पर इसलिए स्थापित किया जा रहा है, क्योंकि उनकी डिग्री को लेकर संदेह खड़े किए जाते रहे हैं। क्योंकि इससे पहले तो किसी प्रधानमंत्री पर ऐसे सवाल नहीं किए गए। एक लोकतांत्रिक देश में, जनता के धन से संचालित सार्वजनिक प्रसार संस्था का इस्तेमाल प्रधानमंत्री अपने मन की बात करने के लिए कर रहे हैं, यह गलत मिसाल देश में पड़ी। आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि की स्थापना देश में कृषि कार्यों में गुणात्मक सुधार और शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए की गई थी। जागरुकता के प्रसार के साथ–साथ बाद में इसका इस्तेमाल जनता तक स्वस्थ मनोरंजन पहुंचाने के लिए किया गया। देश के कोने–कोने तक आकाशवाणी और दूरदर्शन की तरंगें पहुंचाई गईं, इससे देश को एक सूत्र में बांधने में मदद मिली। प्रधानमंत्री मोदी अगर ऐसी ही कोई पहल करते तो उसका स्वागत होता। मगर अफसोस उन्होंने इस महत्वपूर्ण, शक्तिशाली साधन को अपने प्रचार के लिए इस्तेमाल किया। उनके मन की बात में न महिला सुरक्षा की बात है, न बेरोजगारी या महंगाई की, न आत्महत्या के बढ़ते प्रकरणों की, न किसानों या मजदूरों की दिक्कतों का जिक्र है।

आज आपकी जरूरत है, आर्य चाणक्य

स्थानीय मौसम, स्थानीय देशी बीज, खेती, उन पर आधारित कुटीर उद्योग सुचारू रूप से कार्यरत हों इसके लिए स्वायत्तता प्राप्त पंचायतों का होना बहुत जरूरी है। प्रसन्नता की बात है कि भारत के विभिन्न राज्यों में कई स्थानीय पंचायतों ने क्रांतिकारी कदम उठाकर वहां के समाज को सशक्त किया है, फिर वह चर्मोद्योग हो, हस्तशिल्प हो, कच्ची घाणी का तेल हो, साबुन हो, सौंदर्यीकरण के नाम पर स्थानीय....

अरूण डिके

भारत के विभिन्न राज्यों में कई स्थानीय पंचायतों ने क्रांतिकारी कदम उठाकर वहां के समाज को सशक्त किया है, फिर वह चर्मोद्योग हो, हस्तशिल्प हो, कच्ची घाणी का तेल हो, साबुन हो, सौंदर्यीकरण के नाम पर स्थानीय वस्तु को उखाड़ने का विरोध हो, वैधव्य की समाप्ति हो, मशीनीकरण का विरोध हो। इसे और सुचारू रूप देने के लिए आर्य चाणक्य, आज भी आपकी जरूरत है। हमारा पिछला इतिहास चाहे जितना उजला हो और हमारे ऐतिहासिक नायक और नायिकाऐं चाहे जितने वीर, साहसी और आदर्श रहे हों, लेकिन आज के संदर्भ में उनका कार्य नापना और तौलना जरूरी है, ताकि हमारी अगली पीढ़ी ने जो दुनिया हमें सौंप रखी है, हम उन्हें ईमानदारी से सुसज्जित लौटा सकें। दक्षिण भारत के राधाकृष्णन पिल्ले की पुस्तक श्कॉर्पोरेट चाणक्यश भले ही व्यवसाय प्रबंधन से जुड़ी हो, लेकिन चाणक्य हर क्षेत्र में आज भी कितने प्रासंगिक है यह हर जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक को पढ़ना चाहिए। आज से कोई ढ़ाई हजार साल पहले जन्मे विष्णु गुप्त कौटिल्य, आर्य चाणक्य ने किस प्रकार अत्याचारी नंदवंश को समाप्त कर चन्द्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर बिठाया था। उनका दिशा–निर्देश एक निष्पक्ष शासन के लिए विकेंद्रित समाज को पूरा जिम्मा सौंपना है। दुर्भाग्य से उनका लिखा अर्थशास्त्र हमारे स्कूल और कॉलेज से नदारद हैं। राजन राज्य के सैन्य–बल या धर्मसत्ता से नहीं, जनशक्ति से सफल होता है – यह निर्भीकता से कहने वाले आर्य चाणक्य सत्ता से कोसों दूर एक साधारण कुटीर में रहते थे। सेना पर निर्भर देशों की बिगड़ी हालत हम देख रहे हैं और धर्मांध देश आधुनिक युग में कैसे लचर साबित हो रहे हैं यह भी हम देख रहे हैं। यह सही है कि वह काल औद्योगिक बसाहट वाला नहीं था, लेकिन आज की ही तरह विदेशी प्रभाव उस समय भी था। विदेशी आक्रमण भी हुआ तो चाणक्य के कुशल मार्गदर्शन में चन्द्रगुप्त की सेना ने सिकंदर को परास्त कर दिया था। राज्य की सफलता के लिए शस्त्र, शास्त्र और भूमि का समुचित दोहन जरूरी है, यह चाणक्य विधान आज ज्यादा प्रासंगिक है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने सही नारा दिया था – श्जय जवान, जय किसान।श वर्ष 1905 से 1931 तक भारत की खेती–किसानी का गहरा अध्ययन करने के बाद ब्रितानी कृषि वैज्ञानिक अलबर्ट हॉवर्ड ने भी कहा था कि जन–जन की प्राथमिक आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति यदि हो जाती है तो उस देश का बाल–बांका नहीं होगा और नहीं होती तो बड़ा–से–बड़ा पूंजी निवेश भी उस देश को बचा नहीं सकता। श्कॉर्पोरेट कल्चरश में बंधी हमारी शासन व्यवस्था पिछले दशकों में कितनी लचर रही है, यह किसानों की बढ़ती आत्महत्याएं बता रही है। भारत में पंचायत राज चाणक्य ने प्रारंभ किया था। इस देश को दिया हुआ यह उनका सर्वोत्तम उपहार है। खेत और वन भारत के मूलधन हैं और जब व्यापारी अपना मूलधन ही खाना शुरू कर दें तो उसका व्यापार चौपट होना स्वाभाविक है। इसी बात को लेकर चाणक्य ने खेती में सुधार के लिए काम किया। वन और खेत पंचायतों की स्वायत्तता में कार्यरत रहेंगे, यह चाणक्य ने देखा। उनका कथन था कि खेत और गांव भी छोटे आकार के होना चाहिए। हर गांव में 100 से 500 मकान ही होना चाहिए। यही बात 1949 में अमेरिका द्वारा निर्देशित उद्योगों का केवल बीस साल में फेल होना देख ईएफ शुमाकर ने कही थी। जर्मनी में पैदा हुए और लंदन में पढ़े–लिखे शुमाकर अपनी पुस्तक श्स्माल इज ब्यूटीफुलश (लघु ही सर्वोत्तम है) के कारण दुनियाभर में जाने जाते हैं। चाणक्य ने वनीकरण करवाया, वृक्षों से पशुओं के लिए चारा, इमारती लकड़ी और जलाऊ लकड़ी लगवाई। जो वन काटता था उसको कड़ी सजा मिलती थी। पशुओं के लिए गांव–गांव में चिकित्सक रखे जाते थे और उन्हें भरण–पोषण के लिए कुछ जमीनें दी जाती थीं जिसे वे बेच नहीं सकते थे। गांवों से लगान लिया जाता था और जो किसान नियमित रूप से लगान देता था उसे पुरस्कृत किया जाता था। देवदासी, विधवा, विकलांग, त्याज्य और वेश्याओं के भरण–पोषण हेतु उन्हें स्थानीय रोजगार उपलब्ध कराया जाता था, जिसमें कपड़ा बुनाई और मंदिरों में दीपों के लिए कपास की बत्तियां बनाना शामिल था। हर गांव में तालाब और चरनोई हो, यह कौटिल्य ने देखा। चरनोई की व्यवस्था बड़ी वैज्ञानिक थी। श्पड़त भूमिश पर पशुओं को रखा जाता था और उनके लिए जल और चारे की व्यवस्था पंचायत करती थी। 12 साल तक वहां पशुओं के गोबर और गौमूत्र से जब वह भूमि उर्वर हो जाती तब चरनोई दूसरी श्पड़त भूमिश पर ले जाई जाती थी। हर गांव में चाणक्य ने संदेश वाहक भी रखे थे ताकि राजा तक वहां की समस्याएं पहुंच सकें। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कहीं भी मुद्रा–विनिमय और लेन–देन का उल्लेख नहीं है। उनका लिखा अर्थशास्त्र एक प्रकार से समाज–शास्त्र है जो यह बताता है कि राजा से लेकर सामान्य नागरिक के कर्तव्य क्या हैं। गांवों के साथ–साथ चाणक्य ने नगर–विधान भी लिखा है। नगरों की जनसंख्या सीमित हो, यह चाणक्य निश्चित करते थे। यदि नगरों में भीड़ बढ़ी तो चाणक्य उन्हें वापस गांवों में भेज देते थे और शाम को नगरों के प्रवेश द्वार बंद कर दिये जाते थे।जैव–विविधता भारत को प्रकृति से मिला सर्वोच्च उपहार है। चाणक्य के ही समकालीन वराह मिहिर,पाराशर, सूरपाल,सारंगधर, चरक और सुश्रुत जैसे सैकड़ों ऋषि–मुनियों ने गहन अध्ययन कर ऐसी वनस्पतियां खोज निकाली थीं जिनने हमें कम पानी में पकने वाले विभिन्न खाद्यान्न, औषधि, वनस्पति आदि उपलब्ध कराईं। ये आज भी कारगर हैं और यही सच्चा अर्थशास्त्र हैं। श्ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीश में अर्थशास्त्र के दो अर्थ मिलेंगे। पहले का अर्थ औद्योगिक और उसके कारण चलन में आई कागजी मुद्रा से है। आज वह 71 प्रतिशत तक बढ़ गई है। दूसरी परिभाषा प्राकृति संसाधन और उसके योग्य प्रबंधन से जुड़ी है और यही भारत की दुनिया को सबसे बड़ी देन है। स्थानीय मौसम, स्थानीय देशी बीज, खेती, उन पर आधारित कुटीर उद्योग सुचारू रूप से कार्यरत हों इसके लिए स्वायत्तता प्राप्त पंचायतों का होना बहुत जरूरी है। प्रसन्नता की बात है कि भारत के विभिन्न राज्यों में कई स्थानीय पंचायतों ने क्रांतिकारी कदम उठाकर वहां के समाज को सशक्त किया है, फिर वह चर्मोद्योग हो, हस्तशिल्प हो, कच्ची घाणी का तेल हो, साबुन हो, सौंदर्यीकरण के नाम पर स्थानीय वस्तु को उखाड़ने का विरोध हो, वैधव्य की समाप्ति हो, मशीनीकरण का विरोध हो। इसे और सुचारू रूप देने के लिए आर्य चाणक्य, आज भी आपकी जरूरत है।

हालैंड और केन के रिकॉर्ड गोल, ईपीएल में शीर्ष पर पहुंचा मैनचेस्टर सिटी

मैनचेस्टर। एर्लिंग हालैंड के रिकॉर्ड गोल की मदद से मैनचेस्टर सिटी ने फुलहम को 2–1 से हराकर इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल प्रतियोगिता में शीर्ष स्थान हासिल करके खिताब जीतने की अपनी उम्मीदें जगा दी। हालैंड के गोल से जहां मैनचेस्टर सिटी ने जीत दर्ज की वहीं हैरी केन के रिकॉर्ड गोल के बावजूद टोटेनहैम को हार का सामना करना पड़ा जिससे उसकी अगले सत्र में चौंपियंस लीग में जगह बनाने की उम्मीदों को भी करारा झटका लगा है। हालैंड ने इस सत्र में सभी प्रतियोगिताओं में अपना 50वां गोल दागा जबकि केन ने प्रीमियर लीग में अपना 208 वां गोल करके नई उपलब्धि हासिल की लेकिन उनकी टीम टोटेनहैम इसके बावजूद लिवरपूल से 4–3 से हार गई। केन प्रीमियर लीग में सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ियों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। उन्होंने वायने रूनी की बराबरी की। अब उनसे आगे केवल एलन शियरर हैं जिन्होंने प्रीमियर लीग में 260 गोल किए थे। हालैंड ने प्रीमियर लीग के एक सत्र में सर्वाधिक 34 गोल करने के शियरर और एंडी कोल के रिकॉर्ड की बराबरी की। शियरर और एंडी कोल ने जहां 42 मैचों के सत्र में यह उपलब्धि हासिल की थी वही वर्तमान सत्र 38 मैचों का है और हालैंड को अभी छह और मैच खेलने हैं।

केन जहां टोटेनहैम को अभी तक खिताब नहीं दिला पाए हैं वहीं हालैंड ने सिटी की खिताब जीतने की उम्मीदों को पंख लगा दिए हैं।

नार्वे के इस स्ट्राइकर ने तीसरे मिनट में ही पेनल्टी को गोल में बदलकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। कार्लोस विनीसियस ने 15 वें मिनट में फुलहम को बराबरी दिलाई जबकि जूलियन अल्वारेज ने 36वें मिनट में सिटी की तरफ से दूसरा गोल दागा जो आखिर में निर्णायक साबित हुआ। इस जीत से सिटी के 32 मैचों में 76 अंक हो गए हैं और वह आर्सेनल से एक अंक आगे हो गया है जिसके 33 मैचों में 75 अंक हैं। दूसरी तरफ टोटेनहैम 34 मैचों में 54 अंक के साथ छठे स्थान पर खिसक गया है जबकि लिवरपूल उससे आगे पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। उसके 33 मैचों में 56 अंक हैं।

हमारे साथ ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चमक बिखेरेगा यशस्वीः संगकारा

मुंबई। राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच कुमार संगकारा का मानना है कि यशस्वी जायसवाल बहुत तेजी से सीखते हैं और उनमें इंडियन प्रीमियर लीग की उनकी फ्रेंचाइजी की तरफ से ही नहीं बल्कि भारत की तरफ से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भी चमक बिखेरने की क्षमता है। इक्कीस वर्षीय जायसवाल ने आईपीएल के वर्तमान सत्र में शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने अभी तक 47.5 की औसत से 428 रन बनाए हैं जिसमें एक शतक और तीन अर्धशतक शामिल हैं। संगकारा ने राजस्थान रॉयल्स की मुंबई इंडियंस के हाथों छह विकेट से हार के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा,'' वहां बेहद प्रतिभाशाली ही नहीं बल्कि कड़ी मेहनत करने वाला खिलाड़ी है। वह तैयारियों में काफी समय लगाता है और नेट्स पर काफी समय बिताता है।''

उन्होंने कहा,'' उसने तीन से चार साल हमारे साथ बिताए हैं और इससे पता चलता है कि वह अपने काम के प्रति काफी होंगे।'' जायसवाल की शानदार

एकाग्र चित्त है और उसके प्रदर्शन से भी इसका पता चलता है।'' जायसवाल ने मुंबई के खिलाफ मैच में 62 गेंदों पर 124 रन बनाए जिसमें 16 चौके और आठ छक्के शामिल हैं। संगकारा ने कहा,'' उसने बेहतरीन बल्लेबाजी की। वह लगभग पूरी पारी के दौरान बल्लेबाजी करता रहा। उसे केवल हमारे साथ ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अभी लंबा सफर तय करना है। उसे राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने के लिए लगातार रन बनाते रहने पारी से राजस्थान रॉयल्स में सात विकेट पर 212 रन बनाए लेकिन मुंबई ने टिम डेविड की 14 गेंदों पर नाबाद 45 रन की पारी से जीत दर्ज की।

ऑस्ट्रेलिया के इस ऑलराउंडर ने जेसन होल्डर पर लगातार तीन छक्के जड़कर अपनी टीम को जीत दिलाई। उन्होंने कहा कि वह टीम को इस तरह से जीत दिलाने के लिए आतुर थे। डेविड ने कहा,'' मैं टीम को इस तरह से जीत दिलाने के लिए आतुर था इसलिए मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। टीम बेहद रोमांचित है और सभी खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया। मैं अपने लिए मौके के इंतजार में था और मैं वास्तव में बहुत खुश हूं कि मैंने इसका पूरा फायदा उठाया।'' उन्होंने कहा,'' पिछले साल आईपीएल में मेरा पहला अनुभव था और मैं अपना नाम बनाने और टीम में जगह पक्की करने के लिए आतुर था। लेकिन अब मैं जब भी मुंबई इंडियंस की शर्ट पहनता हूं तो उसे जीत दिलाने की कोशिश करता हूं।

एटलेटिको मैड्रिड में एक और जीत से रियाल मैड्रिड पर दबाव बनाए रखा

मैड्रिड। एटलेटिको मैड्रिड ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए एक और बड़ी जीत दर्ज की और स्पेनिश फुटबॉल लीग

ला लीगा में दूसरे स्थान के लिए रियाल मैड्रिड पर दबाव बनाए रखा। एटलेटिको ने रविवार को वल्लाडोलिड हो 5–2 से करारी शिकस्त दी जो उसकी पिछले नौ मैचों में आठवीं जीत है। अंक तालिका में तीसरे स्थान पर काबिज एटलेटिको ने पहले हाफ में तीन और दूसरे हाफ के अंतिम क्षणों में दो गोल किए जिससे वह शहर के अपने प्रतिद्वंदी रियाल मैड्रिड से केवल दो अंक पीछे रह गया है जबकि अभी छह दौर के मैच होने बाकी हैं। रियाल मैड्रिड ने शनिवार को अल्मेरिया को 4–2 से हराया था। इस जीत से एटलेटिको के 32 मैच में 66 अंक हो गए हैं जबकि रियाल मैड्रिड के इतने ही मैचों में 68 अंक हैं। बार्सिलोना 32 मैचों में 79 अंक लेकर शीर्ष पर काबिज है।

नेपाल के राष्ट्रपति पौडेल एम्स से उपचार के बाद स्वदेश लौटे

नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल को सीने से जुड़ी समस्या के उपचार के बाद नयी दिल्ली स्थित एम्स से छुट्टी मिल गई और वह रविवार रात काठमांडू लौटे। राष्ट्रपति कार्यालय ने यह जानकारी दी। पौडेल (78) को सांस लेने में तकलीफ के बाद 19 अप्रैल को नयी दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में इलाज के लिए भारत ले जाया गया था। राष्ट्रपति कार्यालय ने यहां एक बयान में कहा, ''राष्ट्रपति पौडेल का उपचार सफल रहा। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद रविवार को नेपाल एयरलाइंस की नियमित उड़ान के जरिए वह काठमांडू लौट आये।'' बयान में कहा गया है, ''एम्स में स्वास्थ्य संबंधी उनकी कई जांच और उपचार हुआ है।'' पौडेल के इलाज में शामिल डॉक्टरों ने उन्हें कुछ और हफ्ते आराम करने की सलाह दी है। राष्ट्रपति कार्यालय के प्रवक्ता सागर आचार्य द्वारा जारी बयान में कहा गया है, ''राष्ट्रपति के स्वास्थ्य की स्थिति में अब काफी सुधार हुआ है।'' बयान में कहा गया है कि राष्ट्रपति पौडेल ने उनके इलाज में शामिल नेपाली और भारतीय स्वास्थ्य कर्मियों समेत अन्य का शुक्रिया अदा किया है। स्वास्थ्य समस्याओं के बाद पौडेल को 18 अप्रैल को काठमांडू के त्रिभुवन यूनिवर्सिटी टीचिंग हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था और फेफड़े में संक्रमण होने का पता चलने पर उन्हें आगे के इलाज के लिए नयी दिल्ली भेजा गया था।

मिसीसिप्पी में गोलीबारी में दो छात्रों की मौत, चार घायल, आरोपी गिरफ्तार

बे सेंट लुइस। अमेरिकी पुलिस ने 19 वर्षीय व्यक्ति को मिसीसिप्पी खाड़ी तट स्थित एक घर में पार्टी के दौरान रविवार तड़के दो किशारों की हत्या करने तथा चार अन्य को घायल करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। जेल रिकॉर्ड के अनुसार, पास क्रिश्चियन शहर के कैमरून एवरेस्ट ब्रांड पर हत्या तथा उत्तेजित होकर हमला करने का आरोप लगाया गया है। बे सेंट लुइस के पुलिस प्रमुख टॉबी श्वार्ट्ज ने एक समाचार विज्ञप्ति में बताया कि पुलिस ने प्रत्यक्षदर्शी तथा पीड़ितों के बयानों के आधार पर ब्रांड की पहचान की। उसने इस घटना को अकेले ही अंजाम दिया। श्वार्ट्ज ने बताया कि न्यू ओर्लीन्स के एक अस्पताल में 18 वर्षीय तथा 16 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गयी। ब्रांड को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया। अदालत ने उसे जमानत देने से इनकार कर दिया है।

यह घटना तब हुई जब छात्र एक घर में पार्टी के लिए एकत्रित हुए थे। पुलिस ने बताया कि गोलीबारी में कुल छह छात्र घायल हुए जिनकी उम्र 15 से 18 वर्ष के बीच थी। इनमें से दो की अस्पताल में मौत हो गई।

विश्व पयर्टन के मानचित्र पर स्थापित हो गयी है अयोध्या : गिरीश पति त्रिपाठी

अयोध्या। भाजपा मेयर प्रत्याशी महंत गिरीश पति त्रिपाठी ने अयोध्या के मऊ शिवाला के यदुवंशपुर, शाह वदी व चांदपुर हरवंश में जनसम्पर्क किया। उन्होने यहां पार्षद प्रत्याशी के कार्यालय का उद्घाटन भी किया। महंत गिरीश पति त्रिपाठी ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार के प्रयासों की बदौलत अयोध्या विश्व पयर्टन के मानचित्र पर स्थापित हो गयी है। जिससे रोजगार सृजन की सम्भावनाओं को सम्बल मिला है। जल्द अयोध्या देश के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों में एक होगा। जिसका लाभ अयोध्या की जनता को मिलेगा। यहां निवेश भी बढ़ेगा। भाजपा नेता नीरज कन्नौजिया ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति को मिला है। जिससे आम जनता में उत्साह का माहौल है। महापौर चुनाव में भाजपा ऐतिहासिक जीत की ओर बढ़ रही है। गरीबों को आवास, शौचालय तथा गैस व विद्युत कनेक्शन मिला है। प्रथम महापौर ऋषिकेश उपाध्याय ने झारखण्डी वार्ड पार्षद प्रत्याशी बृजेन्द्र सिंह के समर्थन में तथा महानगर अध्यक्ष अभिषेक मिश्रा ने जय प्रकाश नारायन वार्ड में पार्षद प्रत्याशी अनिल सिंह के समर्थन में चुनाव प्रचार किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

सूडान में सेना और अर्धसैनिक बल ने संघर्ष–विराम की अवधि बढ़ायी

काहिरा। सूडान की सेना और उसके प्रतिद्वंद्वी अर्धसैनिक बल ने कहा है कि वे मानवीय संघर्ष–विराम अगले 72 घंटे के लिए बढ़ाएंगे। यह निर्णय नागरिकों और सहायता सामग्री के लिए सुरक्षित मार्ग प्रदान करने के अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद आया है, हालांकि अस्थिरतापूर्ण संघर्ष–विराम से अभी तक संघर्ष रुका नहीं है। बयानों में, दोनों पक्षों ने एक–दूसरे पर उल्लंघन का आरोप लगाया। संघर्ष–विराम समझौते से कुछ क्षेत्रों में संघर्ष कम हो गया है, लेकिन हिंसा से नागरिक पलायन कोमजबूर हो रहे हैं। सहायता समूहों को देश में जरूरी आपूर्ति प्राप्त करने में भी मुश्किल हो रही है।

सूडान की सेना और अर्धसैनिक बल के बीच 15 अप्रैल को संघर्ष छिड़ गया था जिससे देश में गृहयुद्ध शुरू हो गया। जनरल अब्दुल–फतह बुरहान के नेतृत्व में सूडान की सेना और जनरल मोहम्मद हमदान डागलो के नेतृत्व में अर्धसैनिक बल 'रैपिड सपोर्ट फोर्स' के बीच सत्ता संघर्ष ने सूडान के लोकतांत्रिक देश बनने की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। इससे पहले रविवार को, रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति के अनुसार, संघर्ष में तबाह हुए अस्पतालों के लिए आठ टन आपातकालीन चिकित्सा सहायता लेकर एक विमान रविवार को देश में उतरा। ये आपूर्ति सैकड़ों घायलों के इलाज के लिए पर्याप्त है। देश में हिंसा में मरने वालों की संख्या 400 से अधिक हो गई है। रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति ने कहा कि रविवार को चिकित्सा सहायता लेकर एक विमान ने जॉर्डन से उड़ान भरी और पोर्ट सूडान में उतरा। उसने कहा कि इस आपूर्ति में एनेस्थेटिक्स, ड्रेसिंग सामग्री, टांके (स्टिच) और अन्य सर्जिकल सामग्री शामिल है और यह चिकित्सा सामग्री संघर्ष में घायल हुए 1,000 से अधिक लोगों के इलाज के लिए पर्याप्त है। हताहतों की संख्या पर नजर रखने वाले सूडान डॉक्टर्स सिंडिकेट के मुताबिक, पिछले दो सप्ताह से अधिक समय के दौरान देश में संघर्ष में जान गंवाने वाले नागरिकों की संख्या बढ़कर 425 हो गई है, जबकि 2,091 लोग घायल हुए हैं। सूडानी स्वास्थ्य मंत्रालय ने शनिवार को लड़ाकों सहित मरने वालों की कुल संख्या 528 और घायलों की संख्या 4,500 बताई थी।

शीर्ष वरीय अल्कराज और स्वियातेक टूर्नामेंट में आगे बढ़े

मैड्रिड। शीर्ष वरीयता प्राप्त कार्लोस अल्कराज और इगा स्वियातेक ने सीधे सेटों में जीत दर्ज करके मैड्रिड ओपन टेनिस

टूर्नामेंट के अगले दौर में जगह बनाई। पहले दौर में तीन सेट तक जूझने वाले अल्कराज ने दूसरे दौर में 26वीं वरीयता प्राप्त ग्रिगोर दिमित्रोव को6–2, 7–5 से हराकर अंतिम 16 में प्रवेश किया और इस तरह से अपने खिताब बचाने की उम्मीदों को बरकरार रखा। अल्कराज का अगला मुकाबला 13 वीं वरीयता प्राप्त अलेक्जेंडर ज्वेरेव से होगा जिन्हें उन्होंने पिछले साल फाइनल में हराया था। दो बार के मैड्रिड ओपन चौंपियन ज्वेरेव ने क्वालीफायर ह्यूगो ग्रेनियर को एक घंटे से भी कम समय में 6–1, 6–0 से हराया। महिला वर्ग में स्वियातेक ने बर्नार्डा पेरा पर 6–3, 6–2 से आसान जीत दर्ज की। उनका अगला मुकाबला 22वीं वरीयता प्राप्त झेंग किनवेन या 16वीं वरीयता प्राप्त एकातेरिना एलेक्जेंड्रोवा से होगा। तीसरी वरीय जेसिका पेगुला को मैरी बूजकोवा पर 6–4, 7–6 (2) से जीत दर्ज करने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। पांचवीं वरीयता प्राप्त आंद्रे रुबलेव ने योशीहितो निशिओका पर 6–2, 7–5 से जीत दर्ज की। उनका अगला मुकाबला 10वीं वरीयता प्राप्त करेन खाचानोव से होगा, जिन्होंने लगभग तीन घंटे तक चले मैच में रॉबर्टो बॉतिस्ता आगुट को 7–5, 4–6, 6–3 से हराया।

यूक्रेनी बच्चों की मदद के वास्ते गोपनीय शांति 'मिशन' पर काम चल रहा हैः पोप फ्रांसिस

अबोर्ड द पैपल प्लेन। पोप फ्रांसिस ने खुलासा किया है कि यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद रूस ले जाए गए यूक्रेन के बच्चों की मदद के वास्ते एक खुफिया शांति ''मिशन'' पर काम चल रहा है। पोप ने हालांकि इस बारे में ज्यादा कोई जानकारी नहीं दी लेकिन कहा कि वेटिकन युद्ध के दौरान रूस ले जाए गए यूक्रेन के बच्चों की वापसी में मदद का इच्छुक है। पोप फ्रांसिस ने हंगरी से देश लौटते वक्त रविवार को हवाई जहाज में संवाददाताओं से बातचीत में कहा, '' मैं मदद के लिए हाजिर हूं। एक मिशन है जो सार्वजनिक नहीं है, जिस पर काम चल रहा है, जब यह सार्वजनिक होगा,मैं इस पर बात करूंगा।'' पोप फ्रांसिस ने उन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया कि क्या उन्होंने इस सप्ताहांत बुडापेस्ट में हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान अथवा 'रशियन ऑर्थोडॉक्स चर्च'के प्रतिनिधि के साथ शांति पहल के बारे में बात की थी या नहीं। यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद यूक्रेनी बच्चों का देशान्तरण चिंता का विषय रहा है। पोप फ्रांसिस ने कहा कि कुछ कैदियों की अदला–बदली को लेकर मध्यस्थता की गई है और परिवारों को मिलाने के लिए '' जो भी संभव होगा'' वह किया जाएगा। गौरतलब है कि मार्च में अंतरराष्ट्रीय अपराध अदालत ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और रूस के बाल आयुक्त के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया था और उन पर यूक्रेन से बच्चों को अगवा करने के युद्ध आरोप लगाए थे। रूस ने ऐसे सभी आरोपों से इनकार किया है और उसका कहना है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए उन्हें हटाया गया था।

बोर्ड परीक्षा में फेल होने के बाद छात्रा की खुदकशी

बीकापुर–अयोध्या। नगर पंचायत क्षेत्र के गजा का पुरवा तेंदुआ माफी निवासी 17 वर्षीय इंटर की छात्रा अर्पिता पाल पुत्री सुनील पाल का शव सुबह घर के भीतर छत के चूल्ले से लटकता मिलने से परिवार में कोहराम मच गया। बताया गया कि मृतका अर्पिता पाल बीकापुर कस्बा में संचालित भारती इंटर कॉलेज में इंटर की छात्रा थी। और बोर्ड परीक्षा में फेल हो गई थी। बोर्ड परीक्षा में फेल होने के बाद वह काफी डिप्रेशन में थी। मृतका दो बहनों और एक भाई में सबसे बड़ी थी। .सुबह मृतका अर्पिता के परिजन घर के बाहर काम कर रहे थे। और अर्पिता घर में चाय बना रही थी। करीब 7:30 जब मृतका के माता पिता घर के अंदर गए तो अर्पिता का शव छत के कुडे से दुपट्टे के दुपट्टे के साथ लटकता मिला। सूचना मिलने के बाद कोतवाली पुलिस भी मौके पर पहुंची तथा शव को नीचे उतरवाया। और पंचनामा करके अंत्य परीक्षण के लिए भेज दिया गया। हल्का दरोगा उपनिरीक्षक अमित सिंह ने बताया कि पूछताछ में परिजनों द्वारा बताया गया है कि इंटर बोर्ड परीक्षा में असफल हो जाने के चलते मृतका अर्पिता पाल कुछ परेशान थी और डिप्रेशन में चल रही थी। काफी समझाया बुझाया जा रहा था। प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार राय ने बताया कि जांच पड़ताल में प्रथम दृष्टया खुदकुशी का मामला प्रतीत हो रहा है।

मतदान कार्मिकों के निजी वाहन से जाने पर रोक

कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में निर्वाचन से जुड़े अधिकारियों को प्रेक्षक ने दिए निर्देश

महराजगंज। निकाय चुनाव प्रेक्षक शिवप्रसाद प्रथम ने कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में कहा कि मतदान के लिए पोलिंग पार्टी की रवानगी रूट चार्ट के मुताबिक की जाएं। इसमें शिथिलता न बरती जाए। कोई भी कार्मिक निजी वाहन से नहीं जाएगा, बल्कि मतदान दल के लिए निर्धारित वाहन से मतदान केंद्र पर पहुंचेगा। निजी वाहन का प्रयोग करने वाले कार्मिकों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी।

प्रेक्षक ने कहा कि चुनाव को निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराने के लिए आयोग के दिशानिर्देश के मुताबिक ही सभी प्रक्रियाओं को कराया जाए। सेक्टर व जोनल मजिस्ट्रेट स्वयं पोलिंग पार्टियों के रूट चार्ट व निर्धारित मार्ग व मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर लें।

गर्मी के समय पोलिंग बूथ के बाहर पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करें। यह ध्यान दिया जाए कि पोलिंग बूथ के अंदर कोई भी व्यक्ति बोतल या अन्य किसी साधन से पानी न ले जाए।

जिला निर्वाचन अधिकारी सत्येंद्र कुमार ने बूथों, पोलिंग पार्टियों व अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी प्रेक्षक को दी। प्रभारी अधिकारी कार्मिक संतोष कुमार राय ने भी चुनाव में तैनात कार्मिकों के बारे में जानकारी प्रदान की। इस दौरान अपर जिलाधिकारी डॉ. पंकज कुमार वर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक आतिश कुमार सिंह, सहायक निर्वाचन अधिकारी धनंजय कुमार दूबे, नियंत्रण कक्ष के प्रभारी सवींद्र सिंह, निर्वाचन अधिकारी शांतप्रकाश श्रीवास्तव, डीसी त्रिपाठी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

16 पेटी अवैध शराब के साथ तस्कर गिरफ्तार, केस दर्ज

भटनी। वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस ने एक बोलेरो से 16 पेटी शराब बरामद किया। शराब और वाहन जब्त करने के बाद पुलिस ने तस्कर को गिरफ्तार कर उसके विरुद्ध केस दर्ज कर लिया। आरोपी बिहार प्रांत का रहने वाला है। उसने बिहार शराब तस्करी ले जाने की बात स्वीकारी है। पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा के निर्देश पर एसओ वीरेंद्र कुशवाहा पुलिस कर्मियों के साथ नगर स्थित पुल पर वाहन चेकिंग कर रहे थे। तभी मुखबिरों से जानकारी प्राप्त हुई कि एक बोलेरो में शराब भरकर तस्करी को बिहार जा रहा है। कुछ देर में बोलेरो पहुंची तो पुलिस ने जांच की तो उसमें लाखों के 16 पेटी शराब बरामद हुई। तस्कर वाहन छोड़कर भागने का प्रयास किया, लेकिन पकड़ा गया। पूछताछ में उसकी पहचान राजू कुमार निवासी छपरा मौना मोहल्ला के रूप में हुआ। पुलिस शराब और बोलेरो जब्त करने के बाद आरोपी तस्कर के विरुद्ध संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर लिया। एसओ वीरेंद्र कुशवाहा ने बताया कि वाहन चेकिंग के दौरान एक बोलेरो से 16 पेटी शराब पकड़ी गई है। तस्कर पर केस दर्ज कर शराब जब्त कर ली गई है। आरोपी ने तस्करी को बिहार शराब ले जाने की बात स्वीकार की है।

निकाय चुनाव के मद्देनजर संदिग्धों की जांच शुरू

खनुआ। निकाय चुनाव को शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए संदिग्धों की जांच शुरू कर दी गई है। सुबह सोनौली कोतवाली क्षेत्र के कैथवलिया उर्फ बरगदही चौराहे पर बैरियर लगाकर सशस्त्र सीमा बल के इंस्पेक्टर राजीव तिवारी व खनुआ चौकी प्रभारी गंगा राम यादव ने जांच की। सशस्त्र सीमा बल के कार्यवाहक कमांडेंट वरुन कुमार ने बताया कि निकाय चुनाव के मद्देनजर संदिग्धों की जांच की जा रही है। इस मौके पर खनुआ चौकी प्रभारी गंगा राम यादव, फतेह सिंह, आज्ञाराम यादव, धर्मेंद्र यादव, सत्यनारायण, रमाशंकर आदि मौजूद रहे।

स्ट्रांग रूम का निरीक्षण कर डीएम ने दिए निर्देश

कसया। नगर के एयरपोर्ट रोड स्थित मालती पांडेय बालिका इंटर कॉलेज में बने स्ट्रांग रूम का निरीक्षण डीएम व एसपी ने किया। इस विद्यालय में नगर निकाय चुनाव के लिए स्ट्रांग रूम, मतगणना स्थल बनाया गया। अधिकारियों ने वहां पार्किंग और प्रवेश द्वार आदि के बारे में जानकारी ली। नगर पालिका परिषद कुशीनगर व नगर पंचायत फाजिलनगर के लिए इस कॉलेज में स्ट्रांग रूम और मतगणना स्थल बनाया गया है। डीएम रमेश रंजन व एसपी धवल जायसवाल ने कॉलेज में पहुंचकर तैयारियों की जानकारी ली। डीएम ने कहा कि मतगणना को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर लें। किसी भी स्थिति में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस दौरान कसया एसडीएम रत्निका श्रीवास्तव, ईओ प्रेमशंकर गुप्त, एक्सईएन सुरेंद्र सिंह, जेई मुकेश वर्मा, एसएचओ डॉ. अशुतोष तिवारी, श्रवण तिवारी आदि मौजूद रहे।

हल्की बरसात ने खोला नाली-नालों का पोल

बरहज। नगर–क्षेत्र में मौसम के बिगड़ने से पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहने के साथ रुक–रुक कर हल्की बारिश होती रही। पहली बारिश ने नगर–क्षेत्र के नाली–नालों का पोल खोलदिया। कपरवार–रुद्रपुर मार्ग पर नाली–नाला उफनाने से सड़क पर प्रदूषित पानी इकट्ठा हो गया। इसके बीच से लोगों का आवागमन करना मजबूरी हो गया है। जिससे लोग सांसत में हैं। मौसम में बदलाव को देखते हुए विभाग ने आरेंज अलर्ट घोषत किया है। सुबह से ही पूरे दिन रुक–रुक कर बारिश हुई। बारिश से जहां लोगों ने गर्मी से राहत महसूस किया। वहीं कहीं–कहीं नाली–नाला जाम होने और उफनाने के कारण प्रदूषित पानी सड़कों पर फैल गया। कन्या जूनियर हाईस्कूल के निकट कपरवार दलित बस्ती स्थित रुद्रपुर जाने वाली सड़क पर पानी का जमाव हो गया है। रामधीन प्रसाद, भीमल प्रसाद और रामसकल आदि का कहना है कि दरवाजे पर प्रदूषित पानी लगने से जहां गाड़ियों के पहियों के छींटे से लोग सराबोर हो रहे हैं। वहीं भयावह बीमारी की आशंका सता रही है। लोगों का यह भी कहना है कि पानी लगने से सड़क जहां टूट रही है, वहीं जिम्मेदार बेपरवाह हैं। एसडीएम योगेश कुमार ने बताया कि मामला संज्ञान में नहीं है। पता कराता हूं।

बाहर चकाचक, अंदर की सड़क बदहाल

निचलौल। शहर की मुख्य सड़क चकाचक है। अंदर की सड़क बदहाल है। निकाय चुनाव में जनता का सच्चा हमदर्द बनने वाले नेता लोगों के सवाल से निरुत्तर हो जा रहे हैं। शहर की बदहाल सड़कों को इस बार मुद्दा बनाकर जनता नेता जी से सवाल कर रही है। जानकारी के अनुसार, नगर पंचायत का गठन 1990 में किया गया था। नगर के विकास का खाका खिंचने के लिए करोडों रुपये का बजट खप गया, लेकिन नागरिकों को शहर जैसी मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल रही है। नगर पंचायत गठन के तीन दशक बाद भी लोगों को कोई ऐसी सुविधा मुहैया नहीं मिल रही है। जिससे लगे कि वे भी शहर में रहते हैं। शहर में सड़क, नाली समेत पथ प्रकाश की बेहतर व्यवस्था नहीं है। चुनाव मैदान में उतरने प्रत्याशियों से हर गली मोहल्ले में लोग समस्याओं को लेकर सवाल पूछ रहे हैं। कृष्णा नगर, महाशय वार्ड, घोडहवा, आजाद नगर, हिन्दी मोहल्ला, पांडेय वार्ड, जिगिनहवा, हर्रेडिह वार्ड, कृष्णनगर मोहल्ले की सड़क बदहाल है। आने जाने के दौरान थोड़ी सी असावधानी हो जाय तो दुर्घटना होनी तय रहती है। अधिशासी अधिकारी देवेंद्र मणि ने बताया कि चुनाव के बाद सभी समस्याओं का समाधान करा दिया जाएगा।

बादल छाए रहे, गर्मी से मिली राहत

महराजगंज। जिले में बढ़े सियासी तापमान के बीच मौसम का मिजाज नरम हो गया है। कई दिनों से गर्मी की मार झेल रहे लोगों को राहत मिलने की संभावना है। सोमवार को हल्की बूंदाबांदी के आसार बन रहे हैं। चार मई यानी मतदान के दिन हल्की बारिश होने की संभावना मौसम विशेषज्ञ बता रहे हैं। गर्मी से परेशान लोगों ने शाम से थोड़ी राहत महसूस की। तेज धूप न होने की वजह से तापमान में गिरावट अई है। उत्तरी हिमालय के ऊपर कम दबाव के क्षेत्र और राजस्थान के ऊपर चक्रवाती हवाओं की वजह से पूरे उत्तर प्रदेश में बादल छाए हुए हैं। मौसम विशेषज्ञ कैलाश पांडेय ने बताया कि पछुआ हवा की गति 30 किमी प्रति घंटे रहने की संभावना है। सोमवार को बूंदाबांदी होने के साथ ही गर्मी कम रहेगी। न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। अधिकतम तापमान भी 25 से 30 डिग्री सेल्सियस रहेगा। चार मई को हल्की बारिश के आसार बन रहे हैं। पछुआ हवा भी तेज हो सकती है। तापमान में उतार चढ़ाव होगा। अगले 48 घंटों में मौसम बूंदाबांदी की संभावना है।

अभ्युदय योजना में छात्राओं का नाम देने कतरा रहे विद्यालय

महराजगंज। माध्यमिक विद्यालयों की ओर से मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत छात्राओं का नाम देने में रुचि नहीं दिखाई जा रही है। माध्यमिक शिक्षा विभाग ने विद्यालयों से छात्राओं का नाम उपलब्ध कराने को कहा था, मगर 11 विद्यालयों ने ही नाम उपलब्ध कराया है। शेष हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।

जिले के 244 माध्यमिक विद्यालयों में 28 राजकीय, 39 सहायता प्राप्त व 177 वित्त विहीन मान्यता प्राप्त विद्यालय हैं। मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत जेईई व नीट के निशुल्क प्रशिक्षण के लिए विद्यालयों से इच्छुक छात्राओं की सूची उपलब्ध कराने को कहा गया था। 11 विद्यालयों ने छात्राओं के नाम दे दिए हैं। शेष 233 विद्यालयों की ओर से इसमें गंभीरता नहीं दिखाई जा रही है।

जिला विद्यालय निरीक्षक के निर्देश के बाद भी विद्यालयों की ओर से रुचि नहीं दिखाने से जरूरतमंद छात्राओं को लाभ से वंचित होना पड़ सकता है। साथ ही शासन की ओर से संचालित इस योजना की सार्थकता पर भी प्रश्न चिह्न खड़ा हो रहा है।

.इन विद्यालयों ने दिए हैं छात्राओं के नाम

छात्राओं का नाम उपलब्ध कराने वाले विद्यालयों में भागीरथी कृषक इंटर कॉलेज, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज, रामभोली कन्या इंटर कॉलेज, डीएवी नारंग कन्या इंटर कॉलेज, मोतीराम द्विवेदी इंटर कॉलेज, एंग्लो संस्कृत इंटर कॉलेज, दिग्विजयनाथ इंटर कॉलेज चौक बाजार, आदर्श इंटर कॉलेज परसौना, संतलाल इंटर कॉलेज देवीपुर, महात्मा गांधी इंटर कॉलेज सिसवा व जीएसवीएस इंटर कॉलेज महराजगंज शामिल हैं।

राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में सेवानिवृत्ति कार्यक्रम का हुआ आयोजन

गोरखपुर। आज दिनांक 30 अप्रैल 2023 को राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय 15 सैया नगर गोरखपुर पर विभागीय सेवानिवृत्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से रामलछन फार्मासिस्ट की सेवा काल पूर्ण होने पर था। इन्होंने अपने जीवन में विभागीय कार्यों के साथ–साथ जिले के पदाधिकारी के रूप में भी जाने जाते थे। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाग लेने वालों में डॉ ज्वाला प्रसाद मिश्र पूर्व प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, डॉ राजेश्वर गुप्ता प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, सुभाष सिंह पूर्व महामंत्री फार्मासिस्ट संघ उत्तर प्रदेश, अभिषेक कुमार मिश्र योग प्रशिक्षक योग वैलनेस सेंटर, विवेक यादव योग सहायक, सुरेश कुमार भृत्य, ऋषिकेश चौकीदार, काशीनाथ के साथ–साथ चिकित्सालय के समस्त कर्मचारी एवं उनकी जानने वाले बाहरी लोग भी उपस्थित थे। उनकी विभागीय विदाई पूरे सम्मान के साथ की गई।

जग शांति उदयन घर बालिका गामा फर्स्ट का औचक निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

गौतमबुद्धनगर। डीएम मनीष कुमार वर्मा ने महिला कल्याण विभाग के अंतर्गत पंजीकृत जग शांति उदयन घर बालिका गामा फर्स्ट का किया औचक निरीक्षण डीएम ने औचक निरीक्षण के दौरान उपस्थित बालिकाओं और महिला कर्मचारियों से व्यवस्थाओं की ली गहन जानकारी विभिन्न वोकेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम की जानकारी प्राप्त करते हुए दिए आवश्यक दिशा निर्देश उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मंशा के अनुरूप जनपद में अनाथ, असहाय एवं बाल श्रम व भिक्षावृत्ति करने वाले बालक–बालिकाओं को समाज व शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने व उनके हितार्थ चलाई जा रही लाभार्थीपरक योजनाओं का लाभ उन तक पहुंचाने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा बहुत ही संवेदनशील हैं। इसी क्रम में आज डीएम ने महिला कल्याण विभाग के अंतर्गत पंजीकृत स्वैच्छिक संगठन जग शांति उदयन घर बालिका गामा फर्स्ट ग्रेटर नोएडा का औचक निरीक्षण करते हुए वहां पर आवासित बालिकाओं और महिला कर्मचारियों से वार्ता करते हुए वहां की मूलभूत सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान जग शांति उदयन घर बालिका मानकों के अनुरूप संचालित होता पाया गया। डीएम ने इस अवसर पर जग शांति उदयन घर बालिका में संचालित विभिन्न वोकेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम के संबंध में बहुत ही गहनता के साथ जानकारी प्राप्त करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसे बालक–बालिकाओं के कल्याणार्थ प्रदेश सरकार के द्वारा विभिन्न जन कल्याणकारी कार्यक्रम एवं लाभार्थीपरक योजनाएं संचालित की जा रही हैं, उनका लाभ संबंधित अधिकारीगण ऐसे सभी स्वैच्छिक संगठनों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए वहां पर आवासित बालक–बालिकाओं को संचालित कार्यक्रमों एवं योजनाओं से लाभान्वित कराने की कार्रवाई सुनिश्चित करें। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी के साथ बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष डॉक्टर के.सी. विरमानी तथा जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल कुमार सोनी उपस्थित रहे।

मार्शल आर्ट्स आत्मरक्षा व फिटनेस के लिए है उपयोगी:साहेब राम साहनी

गोरखपुर। वाको किकबॉक्सिंग एसोसिएशन ऑफ गोरखपुर व पूर्वांचल निःयुद्ध अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में जिला स्तरीय जिला स्तरीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन गंगोत्री देवी महिला पी.जी. कालेज में संपन्न हुई। प्रतियोगिता में जिले के 200 खिलाडियों हिस्सा लिया जिसमे पॉइंट फाइट और लाइट कांटेक्ट विधि की फाइट के विभिन्न भार वर्गों में मार्शल आर्ट्स खिलाड़ियों ने अपना दमदृखम लगाया और अपने प्रतिद्वंदियों पर किक और पंच चलाकर विभिन्न पदकों पर अपना कब्जा जमाया। प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि डा० छवि सरकारी, गंगोत्री देवी पी. जी. कॉलेज की प्रधानाचार्या पूनम शुक्ला, प्रबंधनिदेशक अशुतोष मिश्रा के द्वारा किया गया दीप प्रज्वलन करके किया । वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में पत्रकार व तीसरी आंख मानवाधिकार संगठन के संत कबीर नगर जिला अध्यक्ष साहेब राम साहनी ने खिलाड़ियों का हौसला आफजाई करते हुए मार्शल आर्ट्स को आत्मरक्षा और फिटनेस के लिए उपयोगी बताते हुए महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा हिस्सा लेने का आह्वान किया। डा० छवि सरकारी ने कहा कि जिला स्तरीय प्रतियोगिताएं अति महत्वपूर्ण होती है क्योंकि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी की शुरुआत यहीं से होती है उन्होंने खिलाड़ियों को लगन से ट्रेनिंग करने और अपने अभिभावकों और गुरुओं का आदर करने के लिए कहते हुए खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य के लिए मंगलकामना किया। वाको किकबॉक्सिंग एसोसिएशन ऑफ गोरखपुर की अध्यक्ष इंदु वर्मा ने उपस्थित अतिथियों और अभिभावकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

समान रैंक समान पेंशन की मांग, पूर्व सैनिकों को सौंपा ज्ञापन

महराजगंज। जिले के भूतपूर्व सैनिकों ने केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं से अवगत कराया। पूर्व सैनिकों ने बताया कि समान रैंक समान पेंशन के लिए 70 दिनों से पंजाब, हरियाणा, जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, मणिपुर और राजस्थान के हजारों पूर्व सैनिक और वीर नारियां उपस्थित होकर अपना आक्रोश व्यक्त कर चुके हैं। तीन अप्रैल को देश के सभी जिलाधिकारियों के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा गया था, लेकिन अफसोस की बात है कि सरकार हमारी मांगों को संज्ञान में नहीं लिया गया। इससे लाखों भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवार में निराशा है। सरकार ने आश्वासन दिया गया था कि समान रैंक, समान पेंशन दिया जाएगा, लेकिन अब तक इसका सही निर्धारण नहीं हुआ। इस दौरान विजय कुमार गुरुंग, दीपक गुरुंग, कृष्णा, बिशन सिंह गुरुंग, प्रेम बहादुर, रिखीराम थापा, अशोक थापा, अमर सिंह थापा, रामप्रसाद, रामू गुरुंग, राम थापा, मान बहादुर, मानसिंह गुरुंग, प्रेम बहादुर आदि मौजूद रहे।

गोला पुलिस सर्विसलॉन्स की मदद से 4 किलो चांदी के साथ गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। गोला पुलिस सर्विस लांस के सहयोग से 18 अप्रैल को गोला बाजार साहू एंड संस सोने चांदी की दुकान 2 महिलाओं मैं ग्राहक बन कर पहुंची थी दुकानदार से जेवरात दिखाने को कहा दुकानदार ने जरा दिखाना प्रारंभ किया महिलाओं ने अपने बातों में उलझाते हुए दुकान से 52 जोड़ी पायल जिसका वजन लगभग 4 किलो को बड़े चतुराई के साथ दुकान से गायब कर रफूचक्कर हो गई थी गोला पुलिस ने सर्विस लांस और सीसी कैमरे की मदद से एक चोरनी रीना देवी पत्नी हरिकेश निवासी गुलजार थाना मुबारकपुर जनपद आजमगढ़ को उदईपुर मोड़ थाना गोला के पास से साहू एंड संस सोने चांदी की दुकान से चोरी हुए 52 जोड़ी पायल के साथ रीना देवी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की पुलिस लाइन वाइट हाउस सभागार में पुलिस अधीक्षक दक्षिणी अरुण कुमार सिंह ने प्रेस वार्ता कर बताया कि साहू एंड संस गोला बाजार की दुकान से बड़े ही चतुराई के साथ 18 अप्रैल 2023 को लगभग 4 किलो चांदी 52 जोड़ी पायल के साथ एक चोरनी रीना देवी पत्नी हरिकेश को सर्विस लांस की मदद से गोला पुलिस ने गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की जो दुकान से गायब चांदी को शत प्रतिशत बरामद किया।

विकास की गंगा बहाकर जनता की पीड़ा करूंगी दूर–अरुंधती पासवान

कार की रफ्तार देख उड़े प्रत्याशियों के होश- अनिल पासवान

गोरखपुर। महानगर के चुनाव में नगर निगम गोरखपुर के वार्ड नं.02 बाबा राघवदास नगर के पार्षद अध्यक्ष पद की निर्दल प्रत्याशी अरुंधती पासवान ने रविवार को वार्ड नंबर 2 बाबा राघवदास नगर में विशाल जन सम्पर्क किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि चुनाव चिन्ह कार की रफ्तार देख अन्य प्रत्याशियों के होश उड़ गये हैं। जनमानस का भरपूर सहयोग व आशीर्वाद प्यार मिल रहा है। जिसको देखकर अन्य प्रत्याशियों के हाथ पांव फूलने लगे हैं।आगे उन्होंने कहा कि वार्ड–02 में शिक्षा, स्वास्थ्य,बिजली,सड़क,पेयजल की व्यवस्था हमारी पहली प्राथमिकता है। युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए मैं कटिबद्ध हूँ।जनता की जो समस्याएं सामने आ रही हैं उसको पहले दूर करके वादा पूरा करूंगी।उनके विश्वास को हमेशा कायम रखने का प्रयास करूंगी। वहीं पति अनिल कुमार पासवान,एडवोकेट ने कहा कि क्षेत्र के जनमानस का जो सहयोग प्यार मिल रहा है उसका हमेशा आभारी रहूँगा।सबके सुख दुख में हमेशा शामिल होता रहा हूं और आगे भविष्य में भी शामिल होता रहूँगा। जनसम्पर्क के दौरान सैकड़ों की संख्या में समर्थक मौजूद रहें।

बाल श्रम एवं भिक्षावृत्ति पर अंकुश लगाने को लेकर बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

गौतमबुद्धनगर। बाल श्रम एवं भिक्षावृत्ति पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा गंभीर डीएम की अध्यक्षता में जिला बाल संरक्षण समिति की बैठक हुई संपन्न बाल श्रम एवं भिक्षावृत्ति पर रोक लगाने को लेकर एकजुट होकर प्रभावी कार्यवाही करें अधिकारीगण प्रदेश सरकार द्वारा बालक–बालिकाओं के हितार्थ चलाई जा रही योजनाओं का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करें संबंधित अधिकारी बाल श्रम, भिक्षावृत्ति करने वाले एवं सुधार गृह में रहने वाले बालक–बालिकाओं को समाज एवं शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रभावी कार्रवाई करें अधिकारीगण उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मंशा के अनुरूप बाल श्रम, भिक्षावृत्ति पर अंकुश लगाने को लेकर बाल श्रम व भिक्षावृत्ति करने वाले बालक–बालिकाओं का संरक्षण एवं बाल सुधार गृह में रह रहे बालक–बालिकाओं को समाज एवं शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से आज जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला बाल संरक्षण समिति की बैठक संपन्न हुई। डीएम ने बाल संरक्षण समिति के कार्यों की समीक्षा करते हुए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनके द्वारा प्रदेश सरकार के माध्यम से अनाथ एवं असहाय बालक–बालिकाओं के हितार्थ चलाई जा रही लाभार्थी परक योजनाओं का लाभ ऐसे पात्र बालक–बालिकाओं तक पहुंचाने के उद्देश्य से आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए प्रभावी कार्यवाही करना सुनिश्चित करें एवं प्रदेश सरकार द्वारा संचालित लाभार्थीपरक योजनाओं का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करते हुए अधिक से अधिक पात्र बालक–बालिकाओं को योजनाओं के लाभ से लाभान्वित किया जाए, ताकि कोई भी पात्र बालक–बालिका योजनाओं से वंचित ना रहे। जिलाधिकारी ने संबंधित विभाग अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि उनके द्वारा बाल श्रम एवं भिक्षावृत्ति करने वाले बालक–बालिकाओं का संरक्षण करते हुए उनको समाज एवं शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करें एवं स्ट्रीट बच्चों को चिन्हित करते हुए उनके आधार वेरिफिकेशन एवं उनको शिक्षा से जोड़ने की अधिकारियों के द्वारा प्रभावी कार्रवाई की जाए। डीएम ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए संबंधित विभाग अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि उनके द्वारा बाल संरक्षण को लेकर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निरंतर बैठकों का आयोजन करते हुए आम जनमानस को जागरूक करने की प्रभावी कार्रवाई करें एवं उनको चाइल्ड हेल्पलाइन के नंबरों के संबंध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाए, ताकि यदि उनके संज्ञान में भिक्षावृत्ति, बाल श्रम या अनाथ व असहाय बच्चों का कोई भी प्रकरण आता है तो वह तत्काल चाइल्ड हेल्प लाइन पर उसकी जानकारी उपलब्ध करा सकें। डीएम ने श्रम विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनके द्वारा अपने स्तर पर जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक करते हुए बाल श्रम पर अंकुश लगाने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने संबंधित विभाग अधिकारों को यह भी निर्देश दिए कि जनपद में सखी वन स्टॉप सेंटर का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए। इस महत्वपूर्ण बैठक का संचालन जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल कुमार सोनी के द्वारा किया गया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विनय कुमार तिवारी, अपर जिलाधिकारी प्रशासन डॉ नितिन मदान, जिला विद्यालय निरीक्षक धर्मवीर सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ऐश्वर्या लक्ष्मी, पुलिस विभाग से उप निरीक्षक इंद्रपाल, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष डॉ केसी विरमानी एवं अन्य संबंधित विभागीय अधिकारी गण उपस्थित रहे।

52 किलो मादक पदार्थ गांजा के साथ किया गया गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा,सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक जनपद डॉ0 यशवीर सिंह के

निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) व क्षेत्राधिकारी घोरावल के पर्यवेक्षण में मादक पदार्थ की तस्करी करने वाले गिरोह पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु थाना करमा पुलिस व एसओजीध्स्वाटध्सर्विलांस टीम सोनभद्र के अथक प्रयास से 30 अप्रैल को करनवाह मोड़ बहदग्राम करमा से एक अदद कार संख्या (ब्ळ 07 ड। 7662) से मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले गैंग के 02 अभियुक्तों 01. सूरज पुत्र स्व0 राजबली निवासी ग्राम हरिहरपुर, तमकुहीराज थाना तमकुहीराज कुशीनगर, 02. जमीर मियां पुत्र अली मियां निवासी ग्राम इनरवां बाजार थाना इनरवां जिला बेस्ट चम्पारण बिहार को कुल 04 बोरियों में 52 किलो मादक पदार्थ गांजा (कीमत लगभग 05 लाख 20 हजार रुपये) के साथ गिरफ्तार किया गया। उपरोक्त बरामदगी व गिरफ्तारी के सम्बन्ध में थाना करमा पर मु0अ0सं0 44ध्2023 धारा 8ध्20 छक्चै ।बज का अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

एक अदद मैजिक से कुल 02 राशि गोवंश किया गया बरामद, अभियुक्त गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक, डॉ0 यशवीर सिंह के कुशल निर्देशन में जनपद में गोवंश तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाने व उसमें संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में 30 अप्रैल को थाना करमा पुलिस द्वारा एक अदद मैजिक वाहन संख्या न्च् 64 ठज् 2474 से थाना करमा क्षेत्र से झारखण्डध् बिहार वध हेतु ले जा रहे 02 राशि गोवंश को बरामद किया गया तथा मौके से 01 नफर अभियुक्त रफीक अहमद पुत्र जलील निवासी ग्राम बहुअरा थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र को गिरफ्तार किया गया। उक्त के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0–43/2023 धारा 3/5/5ए/8 गोवध निवारण अधिनियम अधिनियम का अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

अधिवक्ता संघ के स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ

दैनिक बुद्ध का संदेश

लखनऊ। सुल्तानपुर रोड अधिवक्ता संघ के स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव स्वयंवर लॉन कबीरपुर लखनऊ में संघ के अध्यक्ष अशोक कुमार राय एडवोकेट एवं महासचिव संजय कुमार निगम एडवोकेट के नेतृत्व में संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपर जिला मजिस्ट्रेट प्रशासन विपिन मिश्रा अति विशिष्ट अतिथि नरेश शंकर श्रीवास्तव वरिष्ठ अधिवक्ता व अखिलेश कुमार अवस्थी एडवोकेट अध्यक्ष सदस्य राज्य विधिक परिषद उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि मनोज कुमार मिश्रा एडवोकेट महासचिव अवध बार एसोसिएशन उच्च न्यायालय लखनऊ कुलदीप नारायण मिश्र एडवोकेट महामंत्री बार एसोसिएशन एवं समिति के संरक्षक गण वीरेंद्र कुमार चौधरी एडवोकेट अशोक कुमार वर्मा एडवोकेट प्रेम शंकर पांडे एडवोकेट चूड़ामणि मिश्रा एडवोकेट वरिष्ठ उपाध्यक्ष विद्या कुमार पांडे एडवोकेट अनूप कुमार मिश्रा एडवोकेट के पी सिंह एडवोकेट एवं अन्य समस्त कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन समिति के महासचिव संजय कुमार निगम एडवोकेट द्वारा कार्यक्रम का उद्बोधन मुख्य संरक्षक वीरेंद्र कुमार चौधरी एडवोकेट द्वारा तथा धन्यवाद समिति के अध्यक्ष अशोक कुमार राय एडवोकेट द्वारा किया गया उपस्थित रहे। लखनऊ जनपद के अधिकांश अधिवक्ता।

15 वर्ष की नाबालिग बालिका की शादी हो रही थी जिसे तत्काल लिया गया संज्ञानः राजेश कुमार

जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह व पुलिस अधीक्षक यशवीर सिंह के निर्देश पर त्वरित कार्यवाही से नाबालिग बालिका की रूकी शादी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। विश्वस्त सूत्रों से जानकारी प्राप्त हुआ की थाना पन्नूगज अन्तर्गत ग्राम सिरसी में एक 15 वर्ष नाबालिग बालिका की शादी की जा रही है और आज मटमगरा का कार्यक्रम हो रहा है सूचना के सम्बन्ध मे तत्काल संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह व पुलिस अधीक्षक यशवीर सिंह के निर्देश पर जिला बाल संरक्षण अधिकारी राजेश कुमार खैरवार ने जिला बाल संरक्षण इकाई सोनभद्र से सामाजिक कार्यकर्ताध्नोडल आकांक्षा उपाध्याय, संरक्षण अधिकारी रोमी पाठक, ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे एवं महिला शक्ति केन्द्र से जिला समन्वयक साधना मिश्रा की संयुक्त टीम गठित कर नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही किये जाने हेतु आदेशित किया गया जिसके उपरान्त संयुक्त टीम द्वारा तत्काल सम्बन्धित थाना पन्नूगज से समन्वय स्थापित करते हुए उप निरीक्षक संजीव कुमार राय, मुख्य आरक्षी अनिलेश सिंह आरक्षी अमृत लाल भास्कर, गौरव व महिला आरक्षी सुनैना गौड के साथ ग्राम सिरसी पहुंच कर नाबालिग बालिका के मटमगरा कार्यक्रम को रोकवाते हुए नाबालिग बालिका के माता–पिता से पूछ ताछ किया गया उनके द्वारा बताया गया कि 03ध्05ध्2023 को अपनी पुत्री की शादी करने की तैयारी कर रहे हैं तभी टीम द्वारा बालिका के माता, पिता, से बालिका के उम्र के संबंध में साक्ष्य चाहा गया बालिका के उम्र के संबंध उपलब्ध कराये गये साक्ष्य के आधार पर बालिका का उम्र लगभग 15 वर्ष पाया गया टीम द्वारा बालिका के माता–पिता, व अन्य उपस्थित लोगों को बाल विवाह एक कानूनन अपराध है, बाल विवाह से होने वाले हानियों के बारे में भी बताया गया टीम द्वारा नाबालिग बालिका की विवाह न कर दिया जाये इस कारण से टीम बालिका को अपनी अभिरक्षा में लेते हुए बाल कल्याण समिति के समझ प्रस्तुत करने हेतु ले जाया गया जिसके सम्बन्ध में ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे द्वारा आम जनमानस आग्रह करते हुये कहा गया की बालिका की उम्र 18 वर्ष व बालक का उम्र 21वर्ष पूर्ण होने के उपरांत ही निकाहध् विवाह कराये एवं आकांक्षा उपाध्यक्ष द्वारा बताया गया कि यदि बाल विवाह होने की सूचना प्राप्त होती है तो तत्काल सम्बंधित थाने, ब्लाक, वन स्टाप सेन्टर, जिला बाल संरक्षण इकाई, बाल कल्याण समिति सोनभद्र टोल फ्री नम्बर 1098 या मोबाइल नम्बर 9305036929 व 8318953732 पर सूचित करें सूचना देने वाले ब्यक्ति का नाम गोपनीय रहेगा।

मतदान करने में तैनात कर्मियों को मतदान हेतु डाक मतपत्र उपलब्ध

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिला मजिस्ट्रेटधजिला निर्वाचन अधिकारी (न0नि0) ने अवगत कराया है कि नगर निकाय सामान्य निर्वाचन–2023 में मतदान के दिन ड्यूटी पर तैनात विशेष निर्वाचकों, सेवा नियोजित निर्वाचकों, निवारक निरोध के अधीन निरूद्ध निर्वाचकों एवं कर्तव्यारूढ़ निर्वाचकों तथा निर्वाचन ड्यूटी पर तैनात कर्मियों के मतदान हेतु डाक मतपत्र द्वारा मतदान की सुविधा प्रदान किए जाने हेतु निर्देशित किया जात है। उक्त निर्देशों के अनुक्रम में ऐसे मतदान कार्मिक जो किसी निकाय के मतदाता है और उनकी ड्यूटी नगर निकाय सामान्य निर्वाचन–2023 हेतु किसी भी कार्य में लगी हुई है, उनको पोस्टल बैलेट की सुविधा राजकीय पॉलिटेक्निक कालेज लोढ़ी में दिनांक–02.05.2023 तथा 03.05.203 को प्रातः 10.00 बजे से सायं 05.00 बजे तक उपलब्ध करायी जायेगी उल्लेखनीय है कि मतदान कार्मिकों को द्वितीय प्रशिक्षण दिनांक–02.05.2023 तथा 03.05.2023 को कराया जायेगा। ऐसे समस्त मतदाता जो किसी निकाय के मतदाता हैं और उनकी ड्यूटी चुनाव हेतु किसी भी कार्य में लगायी गयी है, वे निर्धारित तिथियों व निर्धारित स्थान पर डाक मतपत्र से अपना मतदान कर सकते है।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

हाईस्कूल पास मेघावियो छात्र छात्राओं का हुआ सम्मान

दैनिक बुद्ध का संदेश

लखनऊ। बिजनौर क्षेत्र के अशरफ नगर स्थित जय हिन्द

स्कूल के प्रांगण में शनिवारों को यूपी बोर्ड परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास होने वाले छात्र छात्राओं के सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक महेश कुमार सिंह ने सर्वाधिक 89.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला छात्र हिमांशु पाल, प्रथम श्रेणी में 86.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर आने वाली छात्रा नूरुलनिशा एवं 86.6 अंक प्राप्त करने वाले छात्र अंश पांडेय को मेडल एवं माला पहना सम्मानित किया गया इस दौरान प्रथम श्रेणी में आने वाले अन्य मेघावी छात्र छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। इस दौरान छात्र छात्राओं के अभिभावक भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधक ने सभी छात्र छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की।

नाबालिक छोटे बच्चों,स्कूल के बच्चों से चुनाव प्रचार कराने सख्त कार्यवाही

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिला मजिस्ट्रेटधजिला निर्वाचन अधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने अवगत कराया है कि नगर निकायध्नगर पालिका परिषद के चुनावों में विभिन्न राजनीतिक दलों के अधिकृत व निर्दल प्रत्याशियों द्वारा अपने चुनाव प्रचार–प्रसार में नाबालिक छोटे बच्चों को प्रचार–वाहनों के साथ पर्चे बाटने, पोस्टर चिपकाने, बैनर टांगने और रैलियों में हिस्सा लेने के लिए पारिश्रमिक भोगी श्रमिक के सस्ते विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है ज्यादातर छोटे बच्चे स्कूल छोड़कर प्रचार–प्रसार में लगे हुये है, राज्य निर्वाचन आयोग लखनऊ के निर्देशानुसार निर्वाचन की प्रक्रिया की सभी गतिविधियों में हो रहे बच्चों के इस्तेमाल को तत्काल प्रभाव से रोकने हेतु जनपद के समस्त विभागाध्यक्षोंध् निर्वाचन अधिकारियोंध्सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि अगर किशोर श्रम (रोकथाम एंव विनियम) अधिनियम, 1986 संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) और अनुच्छेद 23 (बलात श्रम से संरक्षण का अधिकार) शिक्षा के अधिकार आर0टी0ई0 अधिनियम 2009 सहित भारतीय दंड संहिता की संबन्धित धाराओं और आयोग की आदर्श आचार संहिता के उल्लघंन के तहत बच्चों के अधिकारों की रक्षा और उनके सर्वोत्तम हितों की ध्यान में रखते हुए ऐसे सभी प्रत्याशियों लोगों तथा अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

सीता नवमी : व्रत से मिलता है पुण्य फल

सीता नवमी वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को कहते हैं। धर्म ग्रंथों के अनुसार इसी दिन सीता का प्राकट्य हुआ था। इस पर्व को जानकी नवमी भी कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन पुष्य नक्षत्र में जब महाराजा जनक संतान प्राप्ति की कामना से यज्ञ की भूमि तैयार करने के लिए हल से भूमि जोत रहे थे, उसी समय पृथ्वी से एक बालिका का प्राकट्य हुआ। जोती हुई भूमि को तथा हल की नोक को भी 'सीत' कहा जाता है, इसलिए बालिका का नाम 'सीता' रखा गया। इस दिन वैष्णव संप्रदाय के भक्त माता सीता के निमित्त व्रत रखते हैं और पूजन करते हैं। मान्यता है कि जो भी इस दिन व्रत रखता व श्रीराम सहित सीता का विधि–विधान से पूजन करता है, उसे पृथ्वी दान का फल, सोलह महान दानों का फल तथा सभी तीर्थों के दर्शन का फल अपने आप मिल जाता है। अतरू इस दिन व्रत करने का विशेष महत्त्व है३

सीता जन्म कथा

सीता के विषय में रामायण और अन्य ग्रंथों में जो उल्लेख मिलता है, उसके अनुसार मिथिला के राजा जनक के राज में कई वर्षों से वर्षा नहीं हो रही थी। इससे चिंतित होकर जनक ने जब ऋषियों से विचार किया, तब ऋषियों ने सलाह दी कि महाराज स्वयं खेत में हल चलाएं तो इंद्र की कृपा हो सकती है। मान्यता है कि बिहार स्थित सीममढ़ी का पुनौरा नामक गांव ही वह स्थान है, जहां राजा जनक ने हल चलाया था। हल चलाते समय हल एक धातु से टकराकर अटक गया। जनक ने उस स्थान की खुदाई करने का आदेश दिया। इस स्थान से एक कलश निकला, जिसमें एक सुंदर कन्या थी। राजा जनक निरूसंतान थे। इन्होंने कन्या को ईश्वर की कृपा मानकर पुत्री बना लिया। हल का फल जिसे 'सीत' कहते हैं, उससे टकराने के कारण कलश से कन्या बाहर आई थी, इसलिए कन्या का नाम सीता रखा गया था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम के जन्म के सात वर्ष, एक माह बाद वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को जनक द्वारा खेत में हल की नोक के स्पर्श से एक कन्या मिली, जिसे उन्होंने सीता नाम दिया। जनक दुलारी होने से जानकी, मिथिलावासी होने से मिथिलेश कुमारी नाम भी उन्हें मिले। उपनिषदों, वैदिक वाङ्मय में उनकी अलौकिकता व महिमा का उल्लेख है जहां उन्हें शक्तिस्वरूपा कहा गया है।

सीता जयंतीः सीताजी की जयंती वैशाख शुक्ल नवमी को मनाई जाती है, किंतु भारत के कुछ भागों में इसे फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को मनाते हैं। रामायण के अनुसार वह वैशाख में अवतरित हुई थीं, किंतु निर्णयसिंधु के कल्पतरु ग्रंथानुसार फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी को। अतरू दोनों ही तिथियां उनकी जयंती हेतु मान्य हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा माता जानकी के अनन्य भक्त तुलसीदास ने रामचरितमानस के बालकांड के प्रारंभिक श्लोक में सीता जी को ब्रह्म की तीन क्रियाओं उद्भव, स्थिति, संहार की संचालिका तथा आद्याशक्ति कहकर उनकी वंदना की है। इस घटना से ज्ञात होता है कि सीता राजा जनक की अपनी पुत्री नहीं थीं। धरती के अंदर छुपे कलश से प्राप्त होने के कारण सीता खुद को पृथ्वी की पुत्री मानती थीं। लेकिन वास्तव में सीता के पिता कौन थे और कलश में सीता कैसे आईं, इसका उल्लेख अलग–अलग भाषाओं में लिखे गए रामायण और कथाओं से प्राप्त होता है। अद्भुत रामायण में उल्लेख है कि रावण कहता है कि, 'जब मैं भूलवश अपनी पुत्री से प्रणय की इच्छा करूं, तब वही मेरी मृत्यु का कारण बने।' रावण के इस कथन से ज्ञात होता है कि सीता रावण की पुत्री थीं। अद्भुत रामायण में उल्लेख है कि गृत्समद नामक ब्राह्मण लक्ष्मी को पुत्री रूप में पाने की कामना से प्रतिदिन एक कलश में कुश के अग्र भाग से मंत्रोच्चारण के साथ दूध की बूंदें डालता था। एक दिन जब ब्राह्मण कहीं बाहर गया था, तब रावण इनकी कुटिया में आया और यहां मौजूद ऋषियों को मारकर उनका रक्त कलश में भर लिया। यह कलश लाकर रावण ने मंदोदरी को सौंप दिया। रावण ने कहा कि यह तेज विष है। इसे छुपाकर रख दो। मंदोदरी रावण की उपेक्षा से दुरूखी थी। एक दिन जब रावण बाहर गया था, तब मौका देखकर मंदोदरी ने कलश में रखा रक्त पी लिया। इसके पीने से मंदोदरी गर्भवती हो गई।

पूजन विधिः जिस प्रकार हिंदू समाज में राम नवमी का महात्म्य है, उसी प्रकार जानकी नवमी या सीता नवमी का भी। इस पावन पर्व पर जो व्रत रखता है तथा भगवान रामचंद्र जी सहित भगवती सीता का अपनी शक्ति के अनुसार भक्तिभावपूर्वक विधि–विधान से सोत्साह पूजन वंदन करता है, उसे पृथ्वी दान का फल, महाषोडश दान का फल, अखिल तीर्थ भ्रमण का फल और सर्वभूत दया का फल स्वतरू ही प्राप्त हो जाता है। सीता नवमी पर व्रत एवं पूजन हेतु अष्टमी तिथि को ही स्वच्छ होकर शुद्ध भूमि पर सुंदर मंडप बनाएं। यह मंडप सोलह, आठ अथवा चार स्तंभों का होना चाहिए। मंडप के मध्य में सुंदर आसन रखकर भगवती सीता एवं भगवान श्रीराम की स्थापना करें।

बच्चे की कुंडली में नवग्रह को ऐसे करें मजबूत, प्रेगनेंसी में करने होंगे ये आसान उपाय

ग्रह–नक्षत्रों से मनुष्य का गहरा नाता होता है। इसीलिए ग्रहों के हर बदलाव का असर व्यक्ति के जीवन पर भी देखने को मिलता है। वहीं व्यक्ति के क्रियाकलापों और उपायों से ग्रह प्रभावित होते हैं। ग्रहों को मजबूत करने से व्यक्ति के जीवन में बदलाव आता है। इस दृष्टि से गर्भवती महिलाएं अपनी गतिविधियों में कुछ बदलाव कर लें, तो गर्भ में पल रहे बच्चे की भी नवग्रह मजबूत हो सकते हैं। ऐसे में अगर आप अपने बच्चे को सारे सुख देना चाहते हैं। तो गर्भावस्था के दौरान आपको इन ज्योतिषीय उपायों को जरूर करना चाहिए।

पहला महीना

ज्योतिष के मुताबिक गर्भावस्था का पहला महीना शुक्र ग्रह के प्रभाव में होता है। इस दौरान आप सुंदर बनकर रहें और अपने प्रसाधन पर ध्यान दें। नियमित मेकअप आदि करें। बता दें कि इस महीने प्रेग्नेंट महिलाओं को बादामी रंग के कपड़े पहनने चाहिए और सफेद रंग के कपड़ों का दान करना चाहिए। शुक्र ग्रह सुख समृद्धि और सौंदर्य के कारक हैं। महिला की इन गतिविधियों से बच्चे की कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति मजबूत होती है और उसे सुख–समृद्धि की प्राप्ति होगी।

दूसरा महीना

प्रेग्नेंसी के दूसरे महीने में मंगल ग्रह का प्रभाव अधिक रहता है। इसलिए इस महीने गर्भवती महिलाओं ज्यादा से ज्यादा लाल रंग के कपड़े पहनने चाहिए। वहीं अगर संभव हो तो लाल कपड़े का दान करें। मंगल ग्रह को प्रसन्न करने के लिए हनुमानजी की पूजा–अर्चना करना चाहिए। इसके साथ ही अपने हाथ में लाल रंग का धागा पहनें और सुबह उठने के बाद सबसे पहले कोई लाल फल या लाल मिठाई खानी चाहिए।

तीसरा महीना

ज्योतिष के अनुसार प्रेग्नेंसी का तीसरा महीना बृहस्पति के नाम है। इसलिए इस महीने में अधिक से अधिक पीले कपड़े पहनने चाहिए। बच्चे की कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए गुरुवार के दिन केले के पेड़ का पूजन करना चाहिए। हालांकि तीसरे महीने में प्रतिदिन विष्णु भगवान की पूजा फलदायी होती है। साथ ही हाथ में पीला धागा जरूर बांधना चाहिए। सुबह उठकर सबसे पहले पीला फल या पीला भोजन करें और पीले कपड़े का दान करना चाहिए।

चौथा महीना

प्रेग्नेंसी के चौथे महीने गर्भवती महिला को सूर्य देव को अर्घ्य देना चाहिए। बच्चे की कुंडली में सूर्य की स्थिति मजबूत करने के लिए पूरे महीने अधिक से अधिक नारंगी और लाल रंग के कपड़े पहनने चाहिए और हाथ में संतरी रंग का धागा पहनना चाहिए। इसके अलावा रोज सुबह उठकर थोड़ा सा गुड़ जरूर खाना चाहिए। बता दें कि चौथे महीने में महिला को अपनी रिंग फिंगर में तांबे की अंगूठी पहननी चाहिए। इस महीने अपने पिता या ससुर की सेवा करनी चाहिए।

पांचवा महीना

ज्योतिष के अनुसार प्रेग्नेंसी का चौथा महीना चंद्रमा के नाम है। बच्चे की कुंडली में चंद्रमा को मजबूत करने के लिए इस पूरे महीने बादामी रंग के कपड़े पहनें और हाथ में सफेद धागा बांधे। हर रोज चंद्रमा की रोशनी में बैठना चाहिए। भगवान शंकर की आराधना कर उन्हें जल चढ़ाएं। इस महीने अपनी मां व सास की सेवा करनी चाहिए और हो सके तो उन्हें चांदी के उपहार दें। इसके साथ ही हाथ में चांदी की अंगूठी धारण करें।

छठा महीना

शनिदेव को कर्मफल का देवता कहा जाता है। शनि ग्रह के कारण व्यक्ति का जीवन सबसे अधिक प्रभावित होता है। इसलिए अगर आप भी चाहती हैं कि शनि देव की कृपा आपके होने वाले बच्चे पर बनी रहे तो गर्भावस्था के छठे महीनें नीले, स्लेटी या काले रंग के कपड़े पहनने चाहिए। इस दौरान शनि देव की पूजा–आराधना करनी चाहिए। हर शनिवार को कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को सेवा करें और पक्षियों को सात तरह का दाना डालें। इसके साथ ही पक्षियों के लिए पानी भी रखें और अपने पैर में काले रंग का धागा पहनें।

सातवां महीना

बच्चे पर बुध ग्रह की कृपा पाने के लिए प्रेग्नेंसी के सातवें महीने हरे रंग के कपड़े पहनें और 8 साल से छोटी कन्याओं की सेवा करें और उन्हें खट्टी–मीठी गोलियां खिलाएं। इसके अलावा बुआ को हरे रंग का भोजन कराएं। हर बुधवार को गाय को हरा चारा खिलाने से बच्चे पर बुध ग्रह की कृपा होती है और वह बुद्धिमान होता है। बुधवार को आप अपने हाथों से हरे रंग के कपड़ों का दान करें।

आठवां महीना

गर्भावस्था का आठवां महीना फिर से चंद्रदेव के प्रभाव में होता है। इस महीने चंद्र ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए मां और सास की ज्यादा से ज्यादा सेवा करें। उन्हें चांदी का उपहार देने के साथ ही खुद भी चांदी धारण करें। इस दौरान सफेद कपड़ों का दान करना शुभ होता है। इसके अलावा हर सोमवार को भगवान शंकर को खीर का भोग लगाना चाहिए।

नौवां महीनाः ज्योतिष के अनुसार गर्भावस्था का नवां महीना और आखिरी महीना एक बार फिर सूर्यदेव को समर्पित होता है। इस दौरान सूर्यदेव को प्रसन्न करने के लिए ससुर व पिता की सेवा करनी चाहिए। इस महीने नारंगी व संतरी रंग के कपड़े पहनें और हाथ में तांबे की अंगूठी धारण करें। प्रेग्नेंसी के नौवें महीने रोज पानी में गुड़ डालकर सूर्य देव को अर्घ्य दें।

शनि देव को इस आसान उपाय से करें प्रसन्न, साढ़े साती और ढैय्या के कष्ट भी होंगे कम

हिंदू धर्म में जहां कई देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करने का विधान है। शनि देव कर्मों के आधार पर व्यक्ति को उसका फल देते हैं। शनि देव को न्याय का देवता कहा गया है। सनातन धर्म में जहां यमराज मृत्यु के देवता हैं तो वहीं शनि देव कर्म के दंडाधिकारी हैं। माना जाता है व्यक्ति से गलती जान कर हो या अंजाने में व्यक्ति को उसका फल तो भोगना ही पड़ता है। यही कारण है कि कई लोग शनि देव को क्रूर माना जाता है। आइए जानते हैं शनि देव के बारे में कि आप किन उपायों से शनि देव को प्रसन्न कर सकते हैं।

ऐसे करें शनिदेव को खुश

एक्सपर्ट्स की मानें तो शनि देव को कुछ आसान उपायों से प्रसन्न किया जा सकता है। कुंडली में शनि की साढ़े साती या ढैया की स्थिति और उसके अशुभ प्रभावों को कम करने के कुछ अचूक उपाय है। इन उपायों को शनिवार को करना चाहिए। यह उपाय जल्द ही शुभ फल देते हैं।

कैसे बढ़ती हैं मुश्किलेंः शनि देव के बारे में मान्यता है कि वह अपनी चाल से या राशि में आकर व्यक्ति को उसके कर्मों का फल देते हैं। इसमें सबसे बुरी स्थिति तब मानी जाती है, जब किसी को शनि की साढ़े साती और ढैय्या लगती है। या फिर व्यक्ति की कुंडली में शनि के अशुभ प्रभाव के कारण वह किसी रोग से पीड़ित हो।

शनि की कृपाः शनिदेव न्याय के विधान से बंधे होने की वजह से गलत कर्मों का फल जरूर देते हैं। कुछ अनजाने में हुई गलतियों पर अत्यधिक दंड न देते हुए शनि देव उस दंड को सामान्य कर देते हैं। कहा जाता है कि यदि शनि देव किसी पर प्रसन्न हो जाएं तो उस व्यक्ति का भाग्य चमक उठता है। लेकिन वहीं शनि देव किसी पर क्रोधित हो जाएं तो वह व्यक्ति पल भर में राजा से रंक बन जाता है। इसी वजह से लोग हमेशा शनि देव से भयभीत रहते हैं।

इन लक्षणों से पहचानें शनि की स्थिति

प्राप्त जानकारी के अनुसार, घर में तेल, राई, दालें का नुकसान होने लगे या फैलने लगे, भोजन से बिना कारण अरुचि होने लगें, अलमारी हमेशा अव्यवस्थित होने लगे, परिवार में पिता से अनबन होने लगे, सिर और पिंडलियों में या कमर में दर्द बना रहे, चिड़चिड़ाहट होने लगे, शरीर में हमेशा थकान या पढ़ने–लिखने से या लोगों से मिलने से उकताहट होने लगे और आलस भरा रहे, नहाने–धोने से अरुचि हो, नए कपड़े खरीदने या पहनने का मौका न मिलना आदि स्थितियां शनि ग्रह की अशुभता की ओर इशारा करती हैं।

शनिवार को बंदरों को भुने हुए चनें खिलाना चाहिए। काले कुत्ते को मीठी रोटी पर तेल लगाकर खाने को दें।

वट और पीपल वृक्ष के नीचे प्रत्येक शनिवार को सूर्योदय से पहले कड़वे तेल का दीपक जलाकर शुद्ध कच्चा दूध और ध ूप अर्पित करें।

अपने हाथ के नाप का 29 हाथ लंबा काला धागा लेकर शनिवार को उसको बंटकर माला की तरह गले में धारण करें।

शनि ढैया के प्रभाव को कम करने के लिए क्रवार की रात 8 सौ ग्राम काले तिल पानी में भिगोकर रख दें। फिर शनिवार की सुबह इन्हें पीसकर उसे गुड़ में मिला लें। फिर इन लड्डू को काले घोड़े को खिला दें। आठ शनिवार तक यह उपाय करने से इसके शुभ परिणाम देखने को मिलेंगे।

शनि की साढ़ेसाती झेल रहे व्यक्ति को शनिवार के दिन अंधेरा होने पर पीपल के पेड़ पर मीठा जल अर्पित करें। फिर सरसों के तेल का दीपक जलाकर वहीं पर हनुमान, भैरव और शनि चालीसा का पाठ करें। इसके बाद पीपल की सात बार परिक्रमा करें। हर शनिवार के दिन हनुमान जी के दर्शन करें। इसके साथ ही शनिदेव को तेल चढ़ाकर दशरथकृत शनि स्त्रोत का पाठ करें।

शनिवार को करें ये अचूक उपायः एक्सपर्ट के अनुसार, शनि देव को प्रसन्न करने का सबसे अचूक उपाय शनिवार के दिन मां काली की पूजा करना माना गया है। माता काली को शनि ग्रह को नियंत्रित करने वाली देवी माना गया है। शनि देव के प्रकोप से बचने के लिए मां काली की शरण लेनी चाहिए। मां काली को प्रसन्न करने से शनि देव भी प्रसन्न हो जाते हैं। कुंडली में शनि देव की कृपा खराब होने पर भी यदि मां काली को प्रसन्न कर लिया जाए तो शनिदेव किसी भी व्यक्ति को अत्यधिक दंडित नहीं करते हैं।

अन्य उपायः भोजन में दोनों समय काला नमक और काली मिर्च का प्रयोग करें शनि की अशुभ दशा चलने पर मांस–मदिरा से दूरी बनाकर चलनी चाहिए। घर के किसी अंधेरे हिस्से में लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर रख दें और कटोरी में तांबे का सिक्का डालकर रख दें।

दैनिक उपायः रोजाना हनुमान चालीसा का पाठ करें। सोलह सोमवार का व्रत करना चाहिए। स्फटिक या पारद शिवलिंग पर रोजाना गाय का कच्चा दूध चढ़ाकर शुद्ध जल चढ़ाएं और ऊं नमरू शिवाय मंत्र का जाप करें। प्रदोष व्रत करना चाहिए। शनि ग्रह को शांत करने के लिए पीपल के पेड़ पर हर शनिवार को सरसों के तेल का दीपक जलाएं। घोड़े की नाल का छल्ला ध ारण करें। हनुमानजी के सामने संकटमोचन का पाठ करें।

शनिवार को जरूर करें यह व्रतः शनिवार को सुबह जल्दी स्नान आदि कर शनिदेव की प्रतिमा की विधि–विधान से पूजा करनी चाहिए। शनिवार के दिन शनि मंदिर में शनि देव को नीले लाजवंती के फूल, तिल, तेल, गुड़ अर्पित करें। शनि देव के नाम से दीपोत्सर्ग करें। फिर पूजा के दौरान जाने–अंजाने हुए पापों के लिए क्षमा मांगे। शनिदेव की पूजा के बाद राहु–केतु की भी पूजा करनी चाहिए। शनिवार के दिन पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाकर उसकी सात बार परिक्रमा करनी चाहिए।

शनिवार की शाम को शनि मंदिर में दीप भेंट करना चाहिए। शनि महाराज को उड़द दाल में खिचड़ी बनाकर भोग लगाना चाहिए। काली चींटियों को गुड़ और आटा डालना चाहिए। शनिवार के दिन काले रंग के वस्त्र धारण करना चाहिए। पूरी श्रद्धा से व्रत करने से शनि का कोप शांत रहता है।